
₹ 20
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
अगस्त 2014
★ वर्तमान परिस्थितियां और मुसलमान
—इंजीनियर मुहम्मद सलीम
★ मुहम्मद ﷺ की कल्याणकारी शिक्षाएं
—डॉ॰ मुहम्मद अहमद
★ भ्रष्टाचार मुक्त समाज कैसे ?
—मुहम्मद अली शाह शुऐब
★ ईशभय और चरित्र निर्माण
—ज़हीर ललितपुरी

पुरुषों ने जो कुछ कमाया है,
उसके अनुसार उनका हिस्सा है
और जो स्त्रियों ने कमाया है
उसके अनुसार उनका हिस्सा है ।
–क़ुरआन

"जिस किसी ने तंगदस्त को
मुहलत दी या अपना हक़ जो उस
पर था माफ़ कर दिया तो अल्लाह
क़ियामत के रोज़ की सख़्तियों से
उसको निजात अता फ़रमाएगा ।"
(मुस्लिम)

A. Salam Ansari
Mumbai

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 24 अंक 2 अगस्त 2014

(ऐ नबी) इनसे कहो, मुझे आदेश दिया गया है कि दीन (धर्म) को अल्लाह के लिए ख़ालिस (विशुद्ध) करके उसकी बन्दगी करूं और मुझे आदेश दिया गया है कि सबसे पहले मैं ख़ुद मुस्लिम आज्ञाकारी बनूं। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

यथा राजा...

''यथा राजा तथा प्रजा''
कहावत सदा से चली आयी है ।
विचारक और चिंतक कहते हैं
कि इसमें पूरी सच्चाई है ।

देश में फैले चहूं ओर भ्रष्टाचार का
मूल कारण खोजने जाएंगे तो
इस निष्कर्ष पर सीधे-सीधे पहुंच जाएंगे
कि हमारे आज के राजाओं का आचरण
इसके लिए बहुत हद तक उत्तरदायी है ।

बताते तो हैं स्वयं को जनता का सेवक
किन्तु पहले के किसी राजा महाराजा नवाब
ज़मींदार जागीरदार से किसी प्रकार भी
कम नहीं है इनका ठाठबाठ रुतबा रहन-सहन
आचार-विचार व्यवहार अहंकार और
कोढ़ में खाज के रूप में इनकी
हर प्रकार के हर स्तर के घपलों घोटालों में
गले-गले तक लिप्तता ।

जब-जब भी खुलते हैं इनके कारनामों के पिटारे
जनता अवाक रह जाती है आश्चर्य के मारे
मामूली से राजनीतिक पद पर पहुंचते ही
कैसे कोई अचानक मालामाल हो जाता है
बहुत सिर खपाने पर भी जनता को
इसका रहस्य समझ में नहीं आता है !

नयी सरकार और कुछ करे या न करे
इतना तो कर ही दे
कि शासन में बैठे हर छोटे बड़े के
आचरण में पारदर्शिता ले आये ।
ताकि उपरोक्त कहावत के अनुसार
जनता को भ्रष्ट आचरण हेतु
बैठे बिठाये बहाना न मिलने पाये !

ओमप्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर (म०प्र०)



कहां क्या है ?

यथा राजा...	–ओम प्रकाश बजाज	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
स्वाधीन भारत और धर्मनिरपेक्षता (संपादकीय)		7
स्वाधीनता दिवस का महत्व (आपके पत्र)		9
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की कल्याणकारी शिक्षाएं	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	13
ईशभय और चरित्र निर्माण	–ज़हीर ललितपुरी	18
पर्यावरण आन्दोलन की सार्थक राह	–भारत डोगरा	19
नैतिक मूल्यों से नाता तोड़ती युवा पीढ़ी	–सी॰के॰ रहमानी	23
वर्तमान परिस्थितियां और मुसलमान	–इंजीनियर मुहम्मद सलीम	26–27
मनोवृत्ति में बदलाव की ज़रूरत	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	31
सुकर्मी ही अल्लाह को प्रिय	–मौलाना जलालुद्दीन उमरी	32
भ्रष्टाचार मुक्त समाज कैसे ?	–मुहम्मद अली शाह शुऐब	33
कालचक्र (कहानी)	–डॉ॰ सलीम ख़ान	39
हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं	–राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु'	43
जीवन को सार्थक बनाइए	–श्याम नारायण चौहान	45
ख़तरा बढ़ रहा है हमारे समुद्री तटों पर	–विनय राणा	48
कैसे-कैसे अजीब नाम (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	50

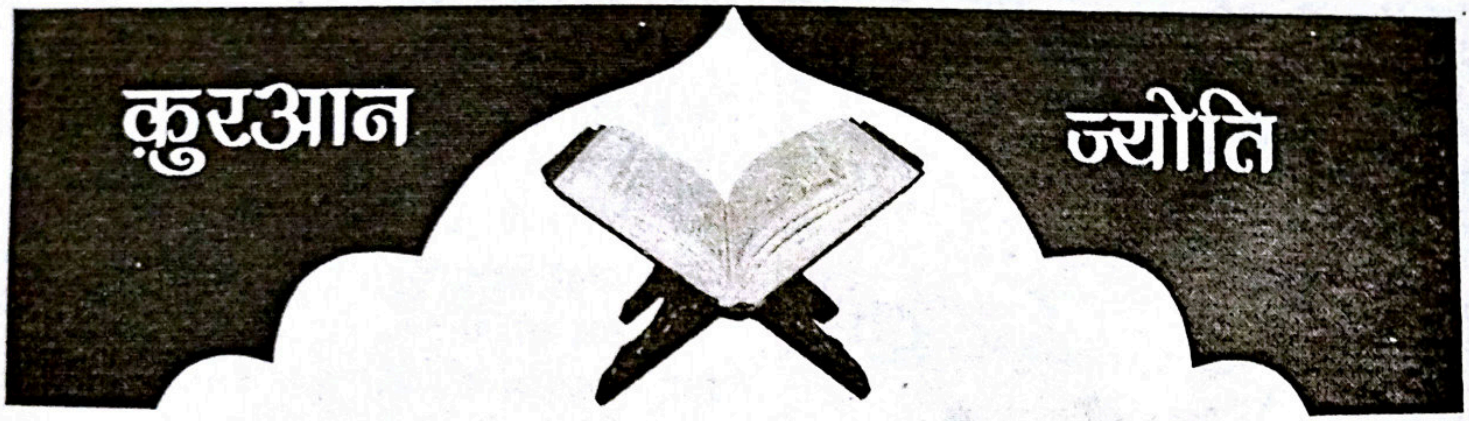

(58) ऐ नबी ! इनमें से कुछ लोग सदक़ों[56अ] के बंटवारे में तुम पर आपत्ति करते हैं । अगर इस माल में से उन्हें कुछ दे दिया जाए तो प्रसन्न हो जाएं और न दिया जाए तो बिगड़ने लगते हैं ।[57] (59) क्या अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ भी उन्हें दिया था उस पर वे राज़ी रहते[58] और कहते कि "अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, वह अपनी मेहरबानी से हमें और बहुत कुछ देगा और उसका रसूल भी हम पर कृपा करेगा[59], हम अल्लाह ही की ओर नज़र जमाए हुए हैं ।"[60] –क़ुरआन, 9 : 56-57

56अ. अर्थात ज़कात के माल ।

57. अरब में यह पहला अवसर था कि देश के उन तमाम निवासियों पर जो एक निर्धारित मात्रा से अधिक माल रखते थे, विधिवत ज़कात लगायी गयी थी, और वह उनकी खेती की पैदावार से, उनके मवेशियों से, उनके व्यापार के माल से, उनके खनिज पदार्थों से और उनके सोने-चांदी के भंडारों से 2.5 फ़ीसदी, 5 फ़ीसदी, 10 फ़ीसदी और 20 फ़ीसदी की विभिन्न दरों के अनुसार वुसूल की जाती थी। ये सब ज़कात के माल व्यवस्थित रूप से वुसूल किये जाते और एक केन्द्र पर जमा होकर संगठित रूप से ख़र्च किये जाते । इस तरह नबी (सल्ल०) के पास देश के चारों ओर से इतना धन सिमटकर आता और आपके हाथों ख़र्च होता था जो अरब के लोगों ने कभी इससे पहले किसी एक व्यक्ति के हाथों जमा होते और बंटते नहीं देखा था । दुनियापरस्त मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) के मुंह में इस धन को देखकर पानी भर-भर आता था । वे चाहते थे कि इस बहती हुई नदी से उनको ख़ूब पेट भरकर पीने का अवसर मिले, पर यहां पिलाने वाला स्वयं अपने ऊपर और अपने रिश्तेदारों पर इस नदी की एक-एक बूंद को हराम कर चुका था और कोई यह आशा न कर सकता था कि उसके हाथों से हक़दार लोगों के सिवा किसी और के होंठों तक जाम पहुंच सकेगा । यही कारण है कि मुनाफ़िक़ नबी (सल्ल०) के सदक़ों के बंटवारे को देख-देखकर दिलों में घुटते थे, और हर बंटवारे के अवसर पर आप पर तरह-तरह के आरोप लगा दिया करते थे । वास्तव में शिकायत तो उन्हें यह थी कि इस माल पर हमें हाथ मारने का अवसर नहीं दिया जाता, मगर इस सच्ची शिकायत को छिपाकर वे यह आरोप लगाते थे कि माल का बंटवारा न्याय के साथ नहीं किया जाता और उसमें तरफ़दारी से काम लिया जाता है ।

58. अर्थात ग़नीमत के माल में से जो हिस्सा नबी (सल्ल०) उनको देते हैं, उस पर संतुष्ट रहते और अल्लाह की मेहरबानी से जो कुछ स्वयं कमाते हैं और अल्लाह की दी हुई आमदनी के साधनों से जो ख़ुशहाली उन्हें मिली हुई है उसको अपने लिए पर्याप्त समझते ।

59. अर्थात ज़कात के अलावा जो माल राज्य-कोष में आएंगे, उनसे हक़ के अनुसार हम लोगों को उसी तरह लाभ उठाने का अवसर प्राप्त रहेगा, जिस तरह अब तक रहा है ।

60. अर्थात हमारी नज़र दुनिया और उसकी तुच्छ पूंजी पर नहीं, बल्कि अल्लाह और उसकी मेहरबानी पर है । उसी की प्रसन्नता हम चाहते हैं । उसी से आशा रखते हैं, जो कुछ वह दे, उसी पर संतुष्ट हैं ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

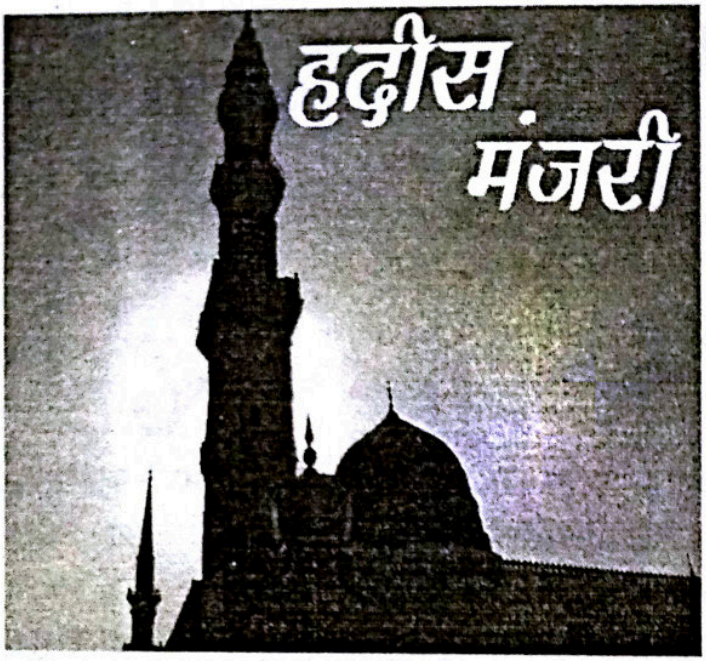

रमज़ान के रोज़े की अनिवार्यता और उनसे संबंधित चीज़ों का माहात्म्य

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक कर्म उसके लिए है सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा, और रोज़ा ढाल है । अत: जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात ज़ुबान पर लाए और न शोर व हंगामा करे अगर कोई उससे गाली-गलौज करे या लड़ाई पर आमादा हो तो रोज़ेदार यह कह दे कि मैं रोज़े से हूं । और उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्ल॰) की जान है, रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है । रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं जो उसे प्राप्त होंगी : जब वह रोज़ा खोलता है तो उसे ख़ुशी प्राप्त होती है और जब अपने रब से मिलेगा, तो उसे अपने रोज़े के कारण ख़ुशी होगी ।"–बुख़ारी, मुस्लिम

ये शब्द बुख़ारी की रिवायत के हैं और उन्हीं की एक रिवायत में है : "वह अपने खाने-पीने और अपनी कामेच्छा को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा और नेकी का बदला दस गुना मिलेगा ।"

मुस्लिम की एक रिवायत में है : "आदम के बेटे के हर कर्म का सवाब दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है । अल्लाह तआला कहता है : किन्तु रोज़े की बात और है क्योंकि वह मेरे ही लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । वह अपनी कामेच्छा और अपने खाने को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं : एक ख़ुशी तो रोज़ा खोलने के समय होती है और एक अपने रब से मुलाक़ात करते समय होगी । और उसके मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुश्क की बू से ज़्यादा बेहतर है ।"

● हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जन्नत में एक द्वार है जिसे 'रैयान' कहते हैं । क़ियामत के दिन उसमें से रोज़ेदार प्रवेश करेंगे । उनके सिवा कोई और उससे प्रवेश न करेगा । कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? वे उठेंगे । उनके सिवा कोई और उससे प्रवेश न करेगा । फिर जब्र वे दाख़िल हो जाएंगे, तो उस द्वार को बन्द कर दिया जाएगा, फिर कोई उससे प्रवेश न करेगा ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू सईद अल-ख़ुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो बन्दा एक दिन अल्लाह की राह में रोज़ा रखता है, तो अल्लाह उस दिन के बदले उसके चेहरे को अवश्य ही आग से सत्तर साल की यात्रा के फ़ासले तक दूर कर देता है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने रमज़ान का रोज़ा ईमान के साथ और सवाब के लिए रखा उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

स्वाधीन भारत और धर्मनिरपेक्षता

हमारा देश स्वाधीनता की 68वीं वर्षगांठ मना रहा है । हम सब भारतीय सहज रूप से पराधीनता से स्वाधीनता की ओर आने की खुशी को प्रति वर्ष ताज़ा करते और इसे अक्षुण्ण रखने का संकल्प लेते हैं । यह कहना भी सच है कि हमें स्वाधीनता की प्राप्ति के साथ कुछ विसंगतियां और समस्याएं भी मिलीं । कुछ हमने स्वयं पैदा कीं । हम यहां अन्य समस्याओं पर चर्चा न करके देश के मौलिक ढांचे और धार्मिकता की स्थिति पर ग़ौर करेंगे । भारतीय संविधान की प्रस्तावना में की गयी घोषणा के अनुसार भारत का शासन किसी एक ख़ास धर्म, जाति या संप्रदाय के विचारों पर न तो आधारित है और न ही इस आधार पर संचालित होगा । यह धर्म, जाति, पंथ या किसी विशेष विचारधारा का आग्रही नहीं होगा । इसे पूरी तरह स्पष्ट करने के लिए 1976 में 42वें संशोधन द्वारा धर्म निरपेक्षता को संविधान की प्रस्तावना में शामिल किया गया । इस प्रकार प्रस्तावना इन शब्दोंवाली बन गयी–''हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को : सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में, व्यक्ति की गरिमा एवं राष्ट्र की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख़ 26 नवम्बर 1949 को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।'' वास्तव में भारतीय संविधान की प्रस्तावना के ये शब्द संविधान के आधारभूत ढांचे को प्रस्तुत करते हैं, लेकिन इसका 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द अवश्य विवादकारी बन गया है । लंबे विचार-विमर्श और मंथन के बाद भी इसकी सर्वमान्य परिभाषा नहीं बन पायी है । पश्चिमी देशों में चर्च को राज्य और शासन से अलग करने के संदर्भ में 'सेकुलरवाद' की जो सोच उभरी, उसे हिन्दी में 'धर्मनिरपेक्ष' अवधारणा का नाम दिया गया । वैसे भी 'सेकुलर' शब्द के इस्तेमाल को लेकर पहले से भ्रामकता विद्यमान रही है । अतएव इसकी प्राथमिक परिभाषा भी विवादित बना दी गयी । उल्लेखनीय है कि बर्मिंघम के जॉर्ज जेकब हॉलीयाक ने सन 1846 के दौरान, अनुभवों द्वारा मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने के तौर-तरीक़ों को दर्शाने के लिए किया था । उनके अनुसार, 'आस्तिकता-नास्तिकता और धर्म ग्रंथों में उलझे बग़ैर मनुष्य मात्र के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, बौद्धिक स्वभाव को उच्चतम संभावित बिंदु तक विकसित करने के लिए प्रतिपादित ज्ञान और सेवा ही धर्मनिरपेक्षता है ।''

सामान्यतया इस शब्द का इस्तेमाल सत्ता-कार्यों से धर्म को अलग रहने के लिए और धर्माधार पर सत्ता न संचालित करने की ग़रज़ से किया गया, किन्तु व्यवहार में एक थोथली बात साबित हुई । देश की सत्ता अपने को धर्म से परे न हटा सकी । केवल नारियल फोड़ने और देवी-देवताओं को पुष्प-माल्यार्पण ही नहीं, हर छोटे-बड़े सरकारी कार्यक्रमों में हिंदुत्व का पुट किसी न किसी रूप में दिखायी पड़ता रहा है । स्वाधीनता के तत्काल बाद से ही यह रोग लग गया था । इससे परेशान होकर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू सोमनाथ मंदिर के नवीनीकरण और पुनर्स्थापना का काम देख रही कमेटी से खुद को अलग कर लिया था । पंडित नेहरू ने धर्मनिरपेक्षता की मौलिकता को अपनाते हुए सौराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री को मंदिर के निर्माण और उद्घाटन में सरकारी पैसा ख़र्च न करने का निर्देश दिया था । उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद से मंदिर का उद्घाटन न करने का आग्रह किया था । उनका तर्क सही था कि धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के प्रमुख को मंदिर के उद्घाटन से बचना चाहिए, हालांकि पंडित नेहरू का आग्रह दरकिनार कर डॉ॰ प्रसाद ने सोमनाथ मंदिर में शिव मूर्ति की स्थापना की थी । इस अवसर पर उन्होंने कहा था कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है लेकिन नास्तिक राष्ट्र नहीं है । इसी प्रकार जब पंडित नेहरू हिंदुओं के पारिवारिक जीवन को व्यवस्थित करने के लिए हिंदू आचारसंहिता विधेयक लाने की कोशिश में थे, तब तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ प्रसाद इसके खुले विरोध में थे । सच है कि धर्मनिरपेक्षता के संवैधानिक प्रावधान के बावजूद सत्ता में धार्मिकता का अवलेह सदा मिला हुआ है । कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ए॰के॰ एंटोनी ने लोकसभा के हाल के चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद कहा था कि सेकुलरवाद को लेकर कांग्रेस को अपना रास्ता ठीक करने की ज़रूरत है । उन्होंने कहा कि जो लोग समझते हैं कि कांग्रेस एक तरफ़ बहुत झुक गयी है, सही और खरी बात है । एंटोनी जी की बात से पूरी तरह सहमत न होते हुए हम यह कहना चाहते हैं कि धर्मनिरपेक्षता के प्रावधान का सदा सांकेतिक इस्तेमाल हुआ है, वह भी राजनीति के हितार्थ । सत्ता से धार्मिकता के अलगाव के चलते संघ परिवार और भाजपा ने इस अवधारणा को पसंद नहीं किया, लेकिन वोटों की राजनीति के चलते सभी राजनीतिक दल अपने को असली सेकुलरवादी कहते हैं ! यहां सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब संविधान में यह स्वीकार कर लिया गया है कि सरकार के कामकाज में किसी धर्म विशेष के तौर-तरीक़ों का अनुकरण या धर्माधारित कृत्य नहीं होंगे, तब रॉकेट छोड़ने जैसे विशुद्ध वैज्ञानिक कृत्य के अवसर पर भी नारियल क्यों फोड़ा जाता है ? अगर यह कहा जाए कि जिस देश की परम्पराएं, शिक्षा-संस्कार, नैतिक मूल्य, समाज व्यवहार, सांस्कृतिक कार्यक्रम और यहां तक कि लोगों की दिनचर्या धर्म से प्रेरित होती हो, वहां सत्ता और राजनीति से धर्म बहिष्कृत कैसे रह सकता है, तो यह बात अवश्य विचारणीय है । अतः इस पर एक खुली और बेबाक बहस की आवश्यकता है ।

स्वाधीनता दिवस का महत्व

आज हम स्वाधीनता दिवस की वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं । हमारे देश को स्वतंत्र कराने हेतु कई महान व्यक्तियों ने त्याग की भावना रखते हुए अपना योगदान दिया । आज हम सभी उन विभूतियों के ऋणी हैं, जिन्होंने गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़कर देश को स्वतंत्र कराया ।

सच्चे लोकतंत्र का अर्थ यही है कि इसमें सरकार जनता की जनता द्वारा व जनता के हितों के लिए होती है परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह परिभाषा सत्ता की पदलोलुपता के कारण विपरीत पड़ती जा रही है । देश के स्वतंत्र होने पर हमें देश विभाजन देखना पड़ा । विशेष रूप से कश्मीर का प्रश्न खड़ा हुआ है इसी प्रकार से तिब्बत का भाग जिसमें चीन अपना अंग मान रहा है । वास्तव में देखा जाए तो हमारे देश के अभिन्न अंग हैं । कुछ ऐसी विघटनकारी शक्तियां हमारे देश को खंडित करने में लगी हुई हैं । आज हमें इस राष्ट्रीय पर्व पर प्रतिज्ञा करनी होगी कि भारत देश को खंडित होने से बचाना है व अखंड भारत का निर्माण करना है ।

देश भक्त भारतीयों का कर्तव्य है कि वर्तमान में आज तक जो भी किसी भी राजनैतिक दल से सत्तारूढ़ व्यक्ति चुने गये हैं, उनका देश व सर्वसाधारण जनता के हित का ध्यान नहीं रहा है । ग़रीब और ग़रीब होता जा रहा है, अमीर और अमीर होता जा रहा है । आये दिन अपराध बढ़ते जा रहे हैं । रिश्वतख़ोरी, भ्रष्टाचार बेईमानी, बलात्कार आदि की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं ।

चुनाव प्रणाली का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि जिससे अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्ति सत्तारूढ़ नहीं हो सकें चाहे वे किसी भी राजनैतिक दल के सदस्य क्यों न हों । यह देखा जा रहा है कि बुद्धिजीवी, ईमानदार, सत्यवादी व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति नहीं चुने जाते हैं कारण उन व्यक्तियों में पदलोलुप्रता का अभाव है । क्या इसलिए देश को स्वतंत्र कराया गया हमें अपने आपको प्रश्न पूछना है । राजनैतिक स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली, परन्तु अभी तक हमारा देश आर्थिक व सामाजिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है ।

हमारा कर्तव्य है कि हमें ऐसे व्यक्तियों को सत्तारूढ़ करना है जो कि देश को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ा सकें, जिससे देश फिर से सोने की चिड़िया कहलाए । आज के दिन हमें यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि हम देश की स्वाधीनता को बनाए रखें । वापस हमारे देश का अखंड भारत बनाना है । आज के दिन को हम अखंड भारत दिवस के रूप में मना रहे हैं ।

चुनाव की प्रक्रिया ऐसी बने जिसमें सर्वसाधारण उदार हृदय ईमानदार, बुद्धिजीवी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भी सत्ता का भागीदार बन सके । ताकि देश का नाम दुनिया के देशों में विकसित हो सके । तभी हम स्वाधीनता दिवस बनाने का महत्व सुचारू रूप से समझ सकेंगे ।

रामस्वरूप झैवर
शास्त्रीनगर माहेश्वरी सभा,
भीलवाड़ा (राज॰)

अनेक सवाल छोड़ गया चुनाव

पिछली बार की भांति इस बार भी चुनाव में विभिन्न पार्टियों ने ऐसे अनेक प्रत्याशियों को उतारा जो भ्रष्ट, दाग़दार तथा आपराधिक छवि के थे । इस बार चुनाव में राजनीतिक स्तर पर जितनी अशोभनीय अमर्यादित तथा स्तरहीन टिप्पणियां बेशर्मी से की गयीं, उतनी इससे पूर्व किसी लोकसभा या विधानसभा चुनाव में नहीं की गयीं और न सुनी गयीं । सैद्धांतिक और वैचारिक असहमति का मतलब गाली-गलौज, धमकी तथा प्रतिशोध नहीं होता । भ्रष्ट आपराधिक छवि के प्रत्याशियों को इन्तिख़ाब में उतारने तथा विरोधियों के ख़िलाफ़ लोकतांत्रिक गरिमा के प्रतिकूल अमर्यादित टिप्पणियां करने में कोई भी दल पीछे नहीं रहा ।

जिस देश में जनता का अरबों रुपये विदेशी बैंकों में काले धन के रूप में जमा हो तथा जिस मुल्क में महंगाई और भ्रष्टाचार चरम बिन्दु पर हो, उस देश में राजनेताओं का इस प्रकार का अमर्यादित आचरण तथा निम्न स्तरीय मानसिकता देखकर यह नहीं लगता कि हम विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के नागरिक हैं । जिस देश में व्यक्तिपरक

पूंजीवादोन्मुख ग्लैमरस राजनीति का बोलबाला हो, एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बिना सोचे समझे अमर्यादित अतिरंजनात्मक तथ्यविरुद्ध टिप्पणियां खुल्लमखुल्ला की जा रही हैं, जातीय तथा साम्प्रदायिक आरक्षण के नाम पर योग्यता तथा रचनात्मक प्रतिभा की उपेक्षा की जाती हो, कारगर कार्रवाई के बजाय करोड़ों अरबों से खेलने वाले ग़ैर-ज़िम्मेदार भ्रष्ट अपराधी नेताओं को पुरस्कारस्वरूप मंत्री पद प्रदान किया जाता हो जिस देश में गनबली, धनबली तथा बाहुबली तिकड़म के बल पर चुनाव जीतने में कामयाब हो जाते हैं तथा साधनविहीन ईमानदार की सियासत में कोई पूछ-क़द्र न हो, जिस देश में लोकसभा तथा विधानसभा में आये दिन जनता की ख़ून-पसीने की कमाई पर ऐश करने वाले जन प्रतिनिधि तोड़-फोड़ करते हों, उस देश को पता नहीं कैसे और क्यों लोकतांत्रिक कहने में हम गर्व का अनुभव करते हैं ।

इस परिस्थिति में हर पांच-पांच साल पर ग्राम प्रधानी से लेकर लोकसभा तक का चुनाव हो जाता ऐसी उपलब्धि नहीं है, जिस पर गर्व किया जाए । अस्ली सवाल लोकतंत्र के सशक्तीकरण का है । जब तक उपर्युक्त बिन्दुओं पर हम संजीदा व ज़िम्मेदार नहीं होंगे और जब तक लोकतांत्रिक व्यवस्था के सशक्तीकरण की दिशा में कारगर कोशिश हीं की जाएगी, केवल मतदान कर देने से क्या लाभ ? मुल्क को गनबलियों, धनबलियों, बाहुबलियों तथा स्वेच्छाचारी राजनेताओं के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता ।

विद्या प्रकाश

अचला घाट मार्ग, सिपाह,

जौनपुर (उ०प्र०)

ज्ञानवर्धक

ज्ञानवर्धक मासिक पत्रिका 'कान्ति' का अप्रैल 2014 का अंक मिला, धन्यवाद । हफ़ीज़ मेरठी की ग़ज़ल तथा रमेश मनोहर की कविता भ्रष्टाचार क़ाबिले तारीफ़ लगी । संपादकीय सोच-समझकर मतदान कीजिए । चुनावों के दौरान सोच-समझकर प्रत्याशी चुनने का सुझाव देने वाला था ।

लेख 'इस्लाम का प्रथम उद्देश्य दुनिया में शांति की स्थापना' इस धर्म के उद्देश्यों को बताने वाला था । भारत डोगरा का लेख 'शराबबंदी की संवैधानिक ज़िम्मेदारी' जानकारी बढ़ाने वाला था । मौलाना अबुल आला मौदूदी का लेख 'इस्लामी अर्थव्यवस्था और उसके अंग' जानकारी बढ़ाने वाला था । अमर आनंद का लेख 'कंप्यूटर से जुड़े व्यवसाय' जानकारी बढ़ाने वाला था । अन्य रचनाएं भी दिलचस्प तथा ज्ञानवर्धक थीं ।

प्रो० शामलाल कौशल

रोहतक (हरियाणा)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

नारी अनंत काल से बहती हुई एक स्वच्छ और निर्मल धारा, जिसका सम्मान करना और जिसकी गरिमा को बनाए रखना हम सबकी ज़िम्मेदारी है । जिसके आंचल में ममता है और अधरों पर मुस्कान है । जो जीवन को सफल और

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

'कान्ति साप्ताहिक' के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'कान्ति साप्ताहिक' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार दो सौ पचास रुपये (Rs. 1250/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा कराने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । 'कान्ति साप्ताहिक' के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों, मित्रों एवं अन्य लोगों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,

जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

09818799223, 011-26949430

E-mail : kantiweekly@hotmail.com

सक्षम बनाती है ।

अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले जाओ । खोल दो मेरे बंधनों को उड़ना है मुझे, गिरना भी है, पर रुकना नहीं है । आज समाज में न जाने कितनी ही पत्रिकाओं, मीडिया के माध्यम से नारी की अपराजित शक्ति को सबके सामने लाया जा रहा है । हमें खुशी है कि जन भी कभी हम आपके लेखों, कविताओं का अध्ययन करते हैं, तो मन गर्व से गूंज उठता है ।

सदियों से नारी ने संघर्ष किया है हर रूप में अपनी पहचान बनायी है, कभी गृहस्वामिनी का दर्जा पाकर, तो कभी दिलों पर राज कर । नारी ने सिद्ध कर दिया है कि 'जहां चाह है वहां राह है' आजकल की एक नयी मुहिम ने कि 'हम सिर्फ़ बहुएं नहीं हैं, हम हैं बहुमत', ने इस बात का भी प्रमाण दिया है कि हम समाज का आधार हैं ।

सदियों पहले एक एक नारी के अपमान ने एक ही कुल के दो परिवारों को कुरुक्षेत्र तक पहुंचा दिया था । कहा भी जाता है कि नारी की टीस उसकी विवशता विध्वंस को जन्म देती है । अब ये हम पर है कि हम एक नयी महाभारत का निर्माण करें या फिर एक नये भारत का । आज आवश्यकता है अपने मूल्यों को, संस्कारों को, आदर्शों को संजो कर रखने की, प्रतिभा को समझने की तभी एक अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है ।

सहानुभूति नहीं, सम्मान चाहिए ।
जीने का अधिकार चाहिए ।
कमज़ोर नहीं, रोशनी हैं हम ।
बदलेगा वक़्त, कल की पहचान हैं हम ।

दीप्ति सक्सेना
रक्षक नगर, खरादी, पुणे (महाराष्ट्र)

अल्पसंख्यक मुस्लिम वर्ग का उत्थान कैसे हो

महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने दोनों सदनों में मोदी सरकार का एजेंडा प्रस्तुत किया । इस एजेंडे में अल्पसंख्यकों के प्रति चिंता दिखायी गयी, जो एक सकारात्मक बात है । बताया गया कि अल्पसंख्यक, ग़रीबी से पीड़ित हैं, उन्हें बराबर का भागीदार बनाया जाएगा साथ ही मदरसों का विकास भी किया जाएगा ।

विदित हो कि मुस्लिम वर्ग विभिन्न समस्याओं से त्रस्त है । सच्चर कमेटी और रंगनाथ मिश्रा कमीशन ने उनके उत्थान हेतु बहुत-सी सिफ़ारिशें लागू करने को कहा था । यदि उन सिफ़ारिशों को लागू कर दिया जाए तो मुस्लिम वर्ग की अनेक समस्याओं का समाधान निकल आएगा । ग़रीबी के कारण वे उच्च शिक्षा से भी महरूम हैं । उन्हें मेडिकल व इंजीनियरिंग आदि उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में विशेष आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए, ताकि वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर समाज व देश की उन्नती में अपना नाम दर्ज करा सकें । इस प्रकार उनके धन अर्जन का मार्ग खुलकर वे अपने परिवार को ग़रीबी से ऊपर उठा सकेंगे ।

दूसरी ओर बहुत से निर्दोष मुसलमान जेलों में क़ैद हैं । न ही उन पर आरोप तय किये गये हैं और न ही उन पर न्यायिक कार्यवाइयां चल रही हैं, अत: उनकी रिहाई के प्रति भी सरकार को ध्यान देना चाहिए ।

डॉ॰ एम॰ ए॰ रशीद
नागपुर (महाराष्ट्र)

'कान्ति संग्रह'

'कान्ति' का जुलाई 2014 अंक पढ़ा । दूसरी पत्रिकाओं के साथ-साथ 'कान्ति' के अंकों का संग्रह भी हमारे पुस्तकालय में सुरक्षित है । पत्रिकाओं के साथ-साथ मूल्यवान पुस्तकों का संग्रह भी हमारे पुस्तकालय में सुरक्षित है । इन सभी का सदुपयोग आने वाले समय तक होता रहेगा व पाठक लाभांवित होते रहेंगे ।

अमित कुमार लाडी
डोडां स्ट्रीट, फ़रीदकोट, पंजाब

बधाई

आपको 'विद्यावारिधि' मिलने पर बधाई । आपका यश चारों ओर फैले ।

विश्वप्रताप भारती
अलीगढ़

स्पष्टीकरण

'कान्ति' (मासिक) के विगत जुलाई 2014 अंक में पृष्ठ 47 पर प्रकाशित 'पेरियार ई॰वी॰ रामास्वामी और इस्लाम' शीर्षक संक्षिप्त टिप्पणी में टिप्पणीकार का नाम नहीं छप सका है, जिसके कारण भ्रम उत्पन्न हो सकता है । यह टिप्पणी प्रसिद्ध दलित चिन्तक वी॰टी॰ राजशेखर की है, जो उन्होंने बरसों पूर्व एक सभा में की थी ।

–संपादक

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 97 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2014-2015 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 15000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 24 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 100 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की कल्याणकारी शिक्षाएं

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

इस्लाम की दृष्टि में व्यक्ति, कुटुम्ब व समाज पर दूसरों के जो अधिकार हैं वे दो प्रकार के हैं–एक, ईश्वर के अधिकार, दूसरे मनुष्यों (और अन्य जीवधारियों) के अधिकार। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)ने दोनों में सामंजस्य स्थापित किया, अपने साथियों को इस सामंजस्य की शिक्षा भी दी और इसके लिए व्यावहारिक स्तर पर उन को तैयार भी किया। अक्सर ऐसा हुआ है कि मानव-अधिकारों की पूर्ति पर जन्नत (स्वर्ग) की शुभ सूचना दी और इनके हनन पर, चाहे हनन करने वाला कितना ही ईश-उपासना करने वाला हो, जहन्नम की भीषण सज़ाओं से सचेत व ख़बरदार किया। इन अधिकारों में ग़ैर-मुस्लिमों के, स्त्रियों के, अनाथों के, किसी कष्ट या संकट में पड़ जाने वाले मुसाफ़िरों के, पड़ोसियों के, बीमारों के, ग़रीबों के, माता-पिता के संतान के, रिश्तेदारों के, शासक और शासित के, दासों और नौकरों के, पति के, पत्नी के इत्यादि–शामिल हैं, यहां तक कि पशु-पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों तक के अधिकार सम्मिलित हैं। यहां सिर्फ़ कुछ संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है–

मानवीय समानता

आप (सल्ल॰) की एक महत्वपूर्ण शिक्षा मानवजाति के बीच समानता है। आपकी शिक्षा है कि इंसान महज़ किसी विशेष रंग, नस्ल, जाति, क्षेत्र में पैदा होने से न तो उच्च, श्रेष्ठ और सज्जन कहलाने का पात्र है और न ही यह न्यूनता, अपमान और निष्कृष्टता का मानदंड है, बल्कि सारे इंसान, चाहे किसी रंग या लस्ल के हों, आपस में भाई-भाई हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"तुम सब आदम की संतान हो और आदम मिट्टी से बने थे।"

एक अन्य अवसर पर और अधिक व्याख्या के साथ फ़रमाया–"ऐ लोगो ! जान लो कि तुम्हारा रब एक है, तुम्हारा पिता एक है।

किसी अरबी को अजमी पर श्रेष्ठता नहीं और न किसी अजमी को किसी अरबी पर, न गोरे को काले पर और न काले को गोरे पर श्रेष्ठता प्राप्त है। श्रेष्ठता यदि किसी को है तो सिर्फ़ तक़वा और परहेज़गारी से है।"

(मुसनद अहमद)

आप (सल्ल॰) इस समानता के व्यावहारिक आदर्श थे। आपका यद्यपि अरब के एक ऐसे समाज में पालन-पोषण हुआ था जहां जातीय श्रेष्ठता का चलन था, लेकिन आप (सल्ल॰) के अनुपम व्यक्तित्व में इसकी प्रतिच्छाया तक न थी। आपकी नज़र में छोटे, बड़े, अमीर और ग़रीब सब बराबर थे। आप (सल्ल॰) भी स्वयं अपने लिए कोई विशिष्टता पसंद नहीं करते थे। सबके साथ मिल-जुलकर रहते थे, यहां तक कि जो लोग आपको पहचानते न थे, उन्हें पूछना पड़ता था कि पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) कौन हैं ?

प्यारे नबी (सल्ल॰) सहाबा (साथियों) के साथ मिल-जुलकर काम भी किया करते थे। मस्जिदे नबवी के निर्माण में आपने मज़दूर की भांति काम किया। ख़ंदक़ की खुदाई में आप सम्मिलित हुए। एक युद्ध में सहाबा ने स्वयं खाना बनाया और काम बांट लिया। आप (सल्ल॰) ने अपने ज़िम्मे यह काम लिया कि आप जंगल से लकड़ियां काटकर लाएंगे। सहाबा ने कहा कि हम सेवा के लिए हाज़िर हैं तो आप (सल्ल॰) ने मना कर दिया और कहा–

"मैं तुमसे श्रेष्ठ नहीं रहना चाहता।"

एक बार सवारियां कम थीं, तो एक ऊंट पर तीन सहाबा बारी-बारी से सफ़र कर रहे थे। आप (सल्ल॰) भी इसी प्रकार सफ़र कर रहे थे। आपके साथियों ने कई बार निवेदन किया कि हम पैदल चल लेंगे, आप सवार रहें।

लेकिन आपने कहा–

"न तुम मुझ से अधिक पैदल चल सकते हो और न मैं तुम से कम सवाब का मुहताज हूं ।"

एक बार प्रतिष्ठित क़बीले मख़ज़ूम की एक औरत चोरी में पकड़ी गयी । लोगों ने आप (सल्ल०) के चहेते उसामा इब्ने ज़ैद के द्वारा सिफ़ारिश करायी कि उसको छोड़ दिया जाए । आप (सल्ल०) ने कहा–

"उसामा, तुम अल्लाह के दंड-विधान में सिफ़ारिश करते हो ?"

आप (सल्ल०) ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि तुमसे पहले की उम्मतें (समुदाय) इसलिए बर्बाद हो गयीं कि जब उनमें कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई जुर्म करता तो उसे क्षमा कर देते और साधारण व्यक्ति जुर्म करता तो उसे सज़ा देते । अल्लाह की क़सम ! अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो उसे भी उसके जुर्म की सज़ा अवश्य दी जाती ।

ग़ुलामी का अन्त

गुलामी के अमानवीय रिवाज को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के आन्दोलन ने गुलामों की स्वतंत्रता और उनके साथ उत्तम व्यवहार को एक अभिन्न अंग बना लिया । आप (सल्ल०) ने कहा–

"जिसको खुदा ने तुम्हारे अधीन कर दिया, उसको वह खिलाओ जो तुम स्वयं खाते हो और वही वस्त्र पहनाओ, जो तुम स्वयं पहनते हो और उनको इतना काम न दे दो जो उन पर भारी हो जाए और अगर भारी काम दो तो उसके काम को पूरा करने में खुद भी साथ मिलकर उसकी सहायता करो ।" (बुख़ारी)

आप (सल्ल०) के इस आदेश पर जब सहाबा (रज़ि०) ने चलना आरंभ कर दिया तो यह भेद करना कठिन हो गया कि मालिक कौन है और दास कौन ? (बुख़ारी) । इस प्रकार ग़ुलामी वास्तव में समाप्त हो गयी । इस सुधार के पीछे भी कोई सरकारी या राजनीतिक शक्ति या पुलिस या फ़ौज या क़ानून न था । यह सब चमत्कार था अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के महानतम व्यक्तित्व का । रंग और वंश का भेद इस प्रकार समाप्त हो गया कि वही अरब जो काले लोगों से घृणा करते थे, उन्हीं अरबों में एक हब्शी गुलाम हज़रत बिलाल (रज़ि०) मस्जिदे नबवी के मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) की हैसियत से प्रतिष्ठित हुए और उन्हें दुनिया में उच्च स्थान प्रदान किया गया । इक़बाल के शब्दों में–

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदो-अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा-नवाज़
बन्दओ, साहिबो, मुहताजो, ग़नी एक हुए,
तेरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए ।

गुलामों के प्रति नबी (सल्ल०) के दयाभाव और व्यवहार ने सहाबा को बहुत प्रभावित किया । हज़रत उस्मान (रज़ि०) ने, जो बड़े धनवान, दानशील और प्यारे नबी के दामाद और तीसरे ख़लीफ़ा थे, एक बार क्रोध में अपने गुलाम का कान ऐंठ दिया तो उसी समय उन्हें एहसास हुआ कि यह तो अच्छा नहीं हुआ । गुलाम से कहा, "तुम भी मेरा कान ऐंठो ।" गुलाम ने कान पर हाथ रख दिया । वे बोले, "नहीं, उसी तरह कड़ाई से ऐंठो, जैसा मैंने ऐंठा था । आख़िरत में अल्लाह इसके बारे में पूछे, इससे अच्छा है कि आज ही इसका बदला हो जाए ।"

स्त्रियों का मान-सम्मान

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन के पूर्व स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा थी । उन्हें कोई अधिकार प्राप्त न था । विरासत में कोई हिस्सा न था । बलात्कार और दुराचार आम था । निर्लज्जता और बेहयाई का चलन था । निकाह की कोई सीमा न थी । पुरुष जितनी चाहता, शादियां कर लेता, यहां तक कि सौतेली मां पर भी अधिकार जमाकर उसे पत्नी बना लिया जाता । बेटी की हत्या का रिवाज आम था । लड़की पैदा होती तो उसे ज़िन्दा गाड़ दिया जाता था । स्त्रियों के साथ कोई शिष्ट व्यवहार नहीं किया जाता था और हर प्रकार से शोषण किया जाता था और वह भोग-विलास की वस्तु समझी जाती थी ।

मानवता-उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस गन्दी मानसिकता को पूरी तरह बदल दिया और स्त्रियों को उनके स्वाभाविक अधिकार दिये और समाज में आदर-सम्मान प्रदान किया । क़ुरआन में है–

"उनके साथ भले तरीक़े से जीवन बिताओ । अगर तुम उनको नापसन्द करते हो तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह ने उसी में बहुत-सी भलाई रख दी हो ।" (क़ुरआन, 4:19)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

"मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह है जो

तुममे अख़लाक़ की दृष्टि से सबसे अच्छा हो, और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी स्त्रियों के प्रति अच्छा हो ।''

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने स्त्री और पुरुष को न्यायपूर्वक अधिकार दिये । दोनों को माल और जायदाद में अधिकार प्रदान किया । दोनों को अपनी-अपनी जायदाद के ख़रीदने-बेचने और उसका प्रबंध करने की आज़ादी दी । वे चाहे उसे रहन रखें, पट्टे पर दें, किसी को बेचें या उसको अपनी ज़रूरतें पूरी करने में इस्तेमाल करें । स्त्री को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त है ।

कुरआन में है–

''मर्दों के लिए भी हिस्सा है, उस चीज़ में से जिसको मां-बाप और बहुत क़रीब के रिश्तेदार छोड़ जाएं और औरतों के लिए भी हिस्सा है, उस चीज़ में से जिसको मां-बाप और नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएं ।'' (कुरआन, 4:7)

''मर्दों के लिए उनके कामों का बदला है और औरतों के लिए उनके कामों का बदला ।'' (कुरआन, 4:32)

एक हदीस में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने स्त्रियों के विषय में नसीहत की है–

''जो तुम खाओ उन्हें भी खिलाओ, जो तुम पहनो उन्हें भी पहनाओ, उनसे मार-पीट मत करो और बुरा-भला मत कहो ।'' (अबू दाऊद)

प्यारे नबी (सल्ल०) ने लड़कियों के पालन-पोषण की प्रेरणा दी । उनकी हत्या पर रोक लगा दी । वर्तमान काल में भी मुस्लिम समाज भ्रूण हत्या जैसी बुराइयों से मुक्त है । यह इस्लाम की शिक्षाओं ही का प्रभाव है, जबकि दूसरे समाजों में इस तरह की घटनाएं आज भी सामने आती रहती हैं । अब तो ग़ैर-मुस्लिम समाज में मादा-भ्रूण हत्या का रिवाज-सा हो गया है ।

इस्लाम लड़कियों पर लड़कों को प्राथमिकता नहीं देता । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

''जिस व्यक्ति के लड़की हो वह न तो ज़िन्दा गाड़े, न उसके साथ उपेक्षा का व्यवहार करे, न उस पर अपने लड़के ही को प्रमुखता दे, तो अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल करेगा ।'' (अबू दाऊद)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने लड़कियों के भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, शादी-विवाह और उनके साथ समता के व्यवहार पर जहन्नम (नरक) से मुक्ति पाने और जन्नत (स्वर्ग) मिलने की खुशख़बरी दी है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

''जिसने तीन लड़कियों की परवरिश की, उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया और उनका विवाह किया और उनके साथ बाद में सद्व्यवहार किया तो उसके लिए जन्नत है ।'' (अबू दाऊद)

एक हदीस में है–

''तुममें से जिसके तीन लड़कियां या तीन बहनें हों, और वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करे तो वह जन्नत में अनिवार्यत: प्रवेश पाएगा ।'' (तिरमिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

''जिस किसी के तीन लड़कियां हों और वह उनके सिलसिले की तकलीफ़ों और आर्थिक कठिनाइयों पर सब्र करे तो उनके साथ उसकी हमदर्दी की वजह से अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।''

फ़रमाते हैं कि इस पर एक व्यक्ति ने पूछा कि अगर किसी के दो लड़कियां हों (और वह उनके सिलसिले में तकलीफ़ उठाए) तो? आपने फ़रमाया कि दो लड़कियां हों तो भी (अल्लाह जन्नत देगा)। एक व्यक्ति ने फिर पूछा कि अगर एक लड़की हो ? आपने फ़रमाया कि एक हो तब भी । (मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने शादी-विवाह में लड़की की रज़ामंदी को स्थान दिया ।

पति का देहांत हो जाए या उसे तलाक़ दे दी जाए और औरत आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी न हो तो उसकी संतान पर और संतान न होने की स्थिति में पिता या दूसरे निकटतम रिश्तेदारों पर उसकी ज़िम्मेदारी डाली गयी है ।

हज़रत सुराक़ा बिन मालिक (रज़ि०) का बयान है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनसे पूछा–

''क्या मैं तुम्हें बताऊं कि सबसे बड़ा सदक़ा (दान-पुण्य) क्या है ?''

कहा, ''हुज़ूर! ज़रूर बताइए ।''

आपने फ़रमाया–''अपनी उस बच्ची पर एहसान करना जो (विधवा होने या तलाक़ दिये जाने के कारण) तेरी तरफ़ लौटा दी गयी हो और तेरे सिवा कोई दूसरा उसका कमाने वाला न हो ।'' (मुसनद अहमद)

आप (सल्ल०) ने विधवा के साथ विवाह करने की प्रेरणा दी है और इसे पुण्य-कर्म बताया ।

पशु-पक्षियों के प्रति दया-भाव

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इंसानों के प्रति उदारता, क्षमाशीलता और दयालुता का व्यवहार किया और इनकी शिक्षा दी। साथ ही पशु-पक्षियों पर भी दया करने की शिक्षा दी।

आप (सल्ल०) सारे जीवधारियों के लिए रहमत बनाकर भेजे गये थे। पशु-पक्षी भी इससे अलग न थे। आप अत्यन्त बहादुर थे और अत्यन्त नरम दिल भी। आपने जानवरों के साथ नरमी करने, उनको खिलाने-पिलाने का हुक्म दिया और सताने से रोका। इस्लाम के आगमन से पूर्व अरबवासी निशानेबाज़ी का शौक़ इस तरह किया करते थे कि किसी जानवर को बांध देते और उस पर निशाना लगाते। आप (सल्ल०) ने इसको सख़्ती से मना किया। एक बार आपकी नज़र एक घोड़े पर पड़ी जिसका चेहरा दाग़ा गया था। आप (सल्ल०) ने कहा, "जिसने इसका चेहरा दाग़ा है उस पर अल्लाह की लानत हो।" (तिरमिज़ी)

आपने जानवरों को लड़ाने से भी मना फ़रमाया। आपके दयाभाव की एक मिसाल देखिए। एक सफ़र में आप (सल्ल०) के साथियों ने एक पक्षी के दो बच्चे पकड़ लिए तो पक्षी अपने बच्चों के लिए व्याकुल हुआ। आपने देखा तो कहा, "इसको किसने व्याकुल किया है ?" सहाबा ने कहा, "हमने इसके बच्चे पकड़ लिए।" आपने उन्हें छोड़ने का हुक्म दिया। (अबू दाऊद)

इसी से मिलती-जुलती एक घटना यह है कि आप (सल्ल०) के पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि एक झाड़ी में चिड़िया के ये बच्चे थे, मैंने निकाल लिए। उनकी मां मेरे ऊपर मंडराने लगी। आपने कहा, "जाओ और जहां से इन बच्चों को उठाया है, वहीं रख आओ।" (अबू दाऊद)

एक रिवायत में है कि एक ऊंट भूख से बेहाल था। आप (सल्ल०) को देखकर वह बिलबिला उठा। आप (सल्ल०) ने उसके मालिक को, जो एक अंसारी थे, बुलाकर चेतावनी दी–

"क्या तुम इन जानवरों के मामले में अल्लाह से नहीं डरते ?" (अबू दाऊद)

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इससे रोका है कि जानवरों को मारने के लिए बांधा जाए। (बुख़ारी, मुस्लिम)

जानवरों के साथ बेरहमी और निर्दयतापूर्वक व्यवहार करने के अनेक मामले इस्लाम के पूर्व अरब में पाये जाते थे। प्यारे नबी (सल्ल०) ने उनके साथ की जा रही सारी ज़्यादतियों का निषेध कर दिया।

एकेश्वरवाद (तौहीद)

1. हज़रत मुग़ीरह इब्ने शोबा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद यह पढ़ा करते थे –

"कोई इलाह (पूज्य) नहीं सिवाय एक अल्लाह के, उसका कोई सहभागी नहीं। राज्य उसी का है, प्रशंसा और स्तुति उसी के लिए है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

2. हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

"तुम्हारा पालनहार प्रभु कहता है, मैं इस बात का हक़ रखता हूं कि मेरा ही डर रखा जाए और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को पूज्य न बनाया जाए। अतः जो व्यक्ति किसी दूसरे को पूज्य बनाने से बचा रहा और उसने मेरे सिवा किसी को पूज्य न समझा तो मेरे योग्य यही है कि मैं उसे बख़्श दूं।" (अहमद, तिरमिज़ी, नसई)

3. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा कि अल्लाह तआला कहता है–

"जिस किसी व्यक्ति ने किसी कर्म में ग़ैर को सम्मिलित किया तो मैं उससे विरक्त हूं और वह कर्म उसी के लिए है जिसके लिए वह किया, मेरा उससे कोई संबंध नहीं।" (मुस्लिम)

अल्लाह पर भरोसा

क़ुरआन में है–"ईमान वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। तुम उसी पर भरोसा करो जो जीवंत है, कभी मरने वाला नहीं है।"(क़ुरआन, 14:11, 25:58)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) यह दुआ मांगा करते थे–

"ऐ अल्लाह ! मैं तेरा आज्ञाकारी हूं और तुझ पर ईमान ले आया, और तुझ पर भरोसा किया। और तेरी तरफ़ रुजू हुआ एवं तेरे सहारे (धर्म-शत्रुओं से) मुक़ाबला किया। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी इज़्ज़त की पनाह लेता हूं–तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं–इससे कि तू मुझे गुमराह करे। तू वह जीवन-सत्ता है, जिसके लिए मौत नहीं और जिन्न, मनुष्य तो मर जाएंगे। (बुख़ारी, मुस्लिम)

ईशभय और चरित्र निर्माण

■ ज़हीर ललितपुरी

चरित्रहीनता मानव समाज पर कलंक है । इन्सानियत को चरित्रवान लोगों की सख़्त ज़रूरत है । वर्तमान समाज में बढ़ती हुई अनैतिकता, भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार और व्यभिचार, जो चरित्रहीनता के तत्व हैं, की मूल वजह लोगों में ईश्वर के डर की कमी है । आजकल आमतौर पर आम आदमियों तथा समक्ष, समर्थ और प्रभावशाली दोनों तरह के लोगों का ऐसा विश्वास है कि उन्हें उनकी किसी ग़लती पर सज़ा देने वाला कोई नहीं है । उनका यही अंधविश्वास उन्हें गुनाह से बचने के बजाय, गुनाह करने के लिए उकसाता है । हक़ीक़त में देखा जाए तो सिर्फ़ वो ही लोग अपराध, गुनाह, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अन्याय और अत्याचार करने से ख़ुद को रोक कर अपने चरित्र की रक्षा करना चाहते हैं जो ईश्वर से डरते हैं । इस्लाम में ईमान लाने वालों को मुत्तक़ी कहा गया है और मुत्तक़ी का अर्थ अपने आपको बुरे काम और गुनाह से बचाने वाला है ।

वस्तुतः आधुनिक भौतिकवादी युग की यह एक ज्वलंत सच्चाई है कि मौजूदा सख़्त क़ानून और सामाजिक अवमानना का डर अब इन्सानों को गुनाह करने से तथा समाज विरोधी कार्य करने से नहीं रोक पाते हैं ।

जिस चरित्रहीनता को सामाजिक अभिशाप कहा जाता है वह सिर्फ़ औरतों के प्रति यौन अपराध नहीं है । इसकी परिभाषा बहुत व्यापक है । हर तरह के अनैतिक, समाज विरोधी और मानव विरोधी कार्य इन्सान के चारित्रिक दोष हैं । किन्तु महिलाओं के प्रति किये जाने वाले दुष्कृत्य, बलात्कार, व्यभिचार, परस्त्रीगमन, वेश्यावृत्ति आदि ऐसे घिनौने चारित्रिक दोष हैं जिनकी वजह से इन्सान सिर्फ़ समाज की निगाहों से नहीं गिरता बल्कि स्वयं अपनी नज़रों से गिर जाता है । फिर भी यह अपराध समाज में इस तरह से लगातार प्रचलन में आ रहे हैं, जिनसे लगता है कि इनको करने वाला इन्सान अपने आपको ज़रा-सा भी ग़लत नहीं समझता, बल्कि कभी-कभी लगता है वह ऐसे अपराध करने में अपनी शान और बहादुरी समझता है ।

इससे बढ़कर ऐसे अपराध भी हैं जिन्हें करने के बाद समाज में इन्सान के सम्मान और हैसियत में कोई कमी नहीं आती । हालांकि कोई भी अपराध अगर इन्सानी क़ानून की नज़र में अपराध है और ईश्वरीय क़ानून की नज़र में भी अपराध है, भले ही आज समाज की नज़र में वह अपराध की परिभाषा से बाहर हो गया है, तो वह अपराध है । ख़ासकर आर्थिक अपराध जैसे चोरी, डकैती और लूट, कालाबाज़ारी, जमाख़ोरी और नाजायज़ मुनाफ़ाख़ोरी, बिजली चोरी, नक़ली दवाओं का व्यापार, खाद्य पदार्थों में मिलावट, धोखाधड़ी, अमानत में ख़यानत, ज़मीन के नाजायज़ क़ब्ज़े, नाजायज़ तौर पर दहेज का लेन-देन, रिश्वतख़ोरी आदि सभी चारित्रिक दोष हैं, क़ानून की नज़र में अपराध हैं, ईश्वर की निगाह में अपराध हैं किन्तु ईश्वर पर विश्वास न होने के कारण आजकल के अनेकों संभ्रांत और माननीय माने जाने वाले लोग भी इन अपराधों को धड़ल्ले से खुलेआम अंजाम देकर जनजीवन को ख़तरे में डाल रहे हैं ।

सख़्त क़ानून और सामाजिक अवमानना का डर पहले कभी इन्सानों को गुनाह करने से और समाज विरोधी कार्य करने से रोकता था किन्तु अब ऐसे इन्सानों को जो ईश्वर से नहीं डरते, गुनाह करने से नहीं रोक पाता क्योंकि उससे बचने के कई उपायों के साथ-साथ उनके प्रभाव और सज़ाओं से होने वाली परेशानी से भी कोई डर पैदा नहीं होता क्योंकि वे सामान्य और साधारण प्रकार की सज़ाएं लगती हैं । दुनिया में प्रचलित न्याय व्यवस्था में आजकल सख़्त सज़ाओं का अभाव है । कई ऐसे अपराध हैं जो गंभीर अपराधों को बढ़ाने में मदद करते हैं और कभी-कभी आपराधिक जगत, अंडरवर्ल्ड और माफ़िया गिरोहों के लिए

आधार बन जाते हैं जैसे शराब, जुआ आदि के कारोबार जिनको करने के लिए सरकारें लाइसेंस देती हैं और ग़ैरक़ानूनी तरीक़े से करने पर मामूली सज़ा के प्रावधान हैं ।

दुनिया में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें कई अपराधी अथवा समाज विरोधी कार्यों में संलिप्त लोग प्रचलित क़ानून की पकड़ से बच जाते हैं । समाज में भी उनके मान-सम्मान में कोई कमी नहीं होती बल्कि वे समाज में उनसे अधिक प्रतिष्ठित और माननीय समझे जाते हैं, जो अच्छे चरित्र के मालिक, सच्चे और ईमानदार होते हैं । वास्तव में सज्जन, शरीफ़ और ईमानदार लोगों को अब समाज में उतना सम्मान नहीं मिलता जितना अनाप-शनाप तरीक़ों से धन-दौलत कमाकर बने हुए संभ्रांत, सक्षम, समर्थ और शक्तिशाली लोगों को मिलता है । समाज में प्रचलित यह रवैया अक्सर बहुत सारे लोगों को हर तरह ग़लत कार्य करने को ग़लत न समझने की प्रेरणा देता है । इससे समाज में अपराध और अनैतिक कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और अच्छाइयों की तरफ़ लोगों का रुझान कम होता जाता है । वस्तुतः आधुनिक भौतिकवादी युग की यह एक ज्वलंत सच्चाई है कि मौजूदा सख़्त क़ानून और सामाजिक अवमानना का डर अब इन्सानों को गुनाह करने से तथा समाज विरोधी कार्य करने से नहीं रोक पाते हैं । जबकि विभिन्न धर्मों के उपदेशों में विभिन्न अपराधों की बतायी गयी पारलौकिक सज़ाओं के व्याख्यान, मान्यताओं और अवधारणाओं पर आस्था व विश्वास मनुष्य को अपराध करने से रोक देते हैं । उक्त सिद्धांत, आस्थाएं व विश्वास मनुष्य के अन्दर नैतिक साहस और बल पैदा करके, इन सिद्धांतों को मानने तथा उनके अनुसार जीवन गुज़ारने के लिए बाध्य करते हैं । जो लोग ईश्वरीय धारणाओं पर विश्वास करते हैं वे ईश्वर की महानता का गुणगान भी करते हैं उसकी भक्ति को भी स्वीकार करते हैं और उसके गुस्से और ग़ज़ब से डरते भी हैं, इसलिए किसी ग़लत और अनैतिक काम से बचते हैं ।

दुनिया के विभिन्न धर्मों के ग्रंथों में और उपदेशों व व्याख्यानों में बताया गया है कि विभिन्न अपराधों की कड़ी ईश्वरप्रदत्त सज़ाएं हैं जो इन्सानों को वास्तव में तो मरने के बाद की ज़िन्दगी में भुगतनी पड़ेंगी । एकेश्वरवाद और बहुदेववाद दोनों का अनुसरण करने वाले धार्मिक लोग जो ईश्वर पर विश्वास करते हैं, उनमें से अधिकतर लोगों का मानना है कि इस संसार, और परलोक का मालिक ईश्वर है । ईश्वर ने संसार और की रचना की वही उसकी देख-रेख और संचालन कर रहा है । उसी ने इन्सान को पैदा किया और वही उसकी परवरिश कर रहा है । जो ईश्वर संसार का रचयिता और संचालक है वही इन्सानों का मार्गदर्शक भी है । उसने इन्सानों को पैदा कर संसार में जीवनयापन का अवसर प्रदान किया है, संसाधन और सुख-सुविधाएं उपलब्ध करायी लेकिन जीवनयापन का तरीक़ा भी बताया जिस पर चलना हर इन्सान के लिए ज़रूरी है ।

इस्लाम, आसमानी किताब पवित्र क़ुरआन और ईश संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं में इन्सान के चरित्र निर्माण पर विशेष ज़ोर दिया गया है । इस्लाम धर्म की विभिन्न इबादतों का मक़सद भी इन्सान की ज़िन्दगी में सुधार करना है । ईश्वर पर ईमान लाने और नेक काम करने वाले, सत्य मार्ग की तरफ़ बुलाने वाले, नैतिक शिक्षाओं का प्रचार करने वाले मुसलमानों को सबसे अच्छा मुसलमान माना जाता है । इस्लाम धर्म में अल्लाह पर ईमान लाने अर्थात ईश्वर पर आस्था और विश्वास रखने का एकमात्र उद्देश्य ही ईश्वर प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए गुनाहों से बचना और सत्यमार्ग पर चलना है । उसमें यह शिक्षा दी गयी है कि नमाज़ बुराइयों से रोकती है । उसमें यह शिखा दी गयी है कि मुसलमानों पर रोज़े इसलिए फ़र्ज़ किये गये हैं कि उनके ज़रिये से उनके मुत्तक़ी, परहेज़गार, संयमी, नेक, चरित्रवान और सज्जन बनने की उम्मीद की जा सकती है । इसी प्रकार ज़कात और हज जैसी इबादतों का मक़सद भी इन्सान को अच्छा इन्सान बनाना है ।

इस बात के अनेकों उदाहरण है कि जो लोग ईश्वर के आदेशों के अनुसार जीवनयापन करते हैं उनमें से अधिकांश सच्चरित, सदाचारी, सभ्य, सुशील और संस्कारवान होते हैं और जो उनकी अवहेलना करते हैं उनमें से अधिकांश दुश्चरित्र, भ्रष्ट और दुराचारी होते हैं । अतः राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक हर स्तर पर ईशभय और नैतिकता की भावना पैदा करके, 'वास्तविक' ईश्वरीय शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करके इन्सानों को चरित्रवान बनाया जा सकता है और समाज में बढ़ती हुई अपराध की प्रवृत्ति पर लगाम लगायी जा सकती है ।

पर्यावरण आन्दोलन की सार्थक राह

❖ भारत डोगरा

पर्यावरण संबंधी जन-चेतना बढ़ रही है पर इसके बावजूद पर्यावरण आन्दोलन से अभी इतने लोग नहीं जुड़े हैं जिससे पर्यावरण विनाश को असरदार ढंग से रोका जा सके । पर्यावरण आन्दोलन बहुत सार्थक आन्दोलन है पर इसमें अभी ऐसे बदलाव ज़रूरी हैं जिससे यह जनआकांक्षाओं से अधिक व्यापक स्तर पर व अधिक मज़बूती से जुड़ सके ।

विभिन्न पर्यावरण आन्दोलन प्राय: इस संदर्भ में सुर्खियों में आते रहते हैं कि किस अनुचित कार्य या योजना को रोकना ज़रूरी है । यह अपनी जगह ज़रूरी है, पर लोग केवल यह नहीं जानना चाहते हैं कि क्या अनुचित है, वे यह भी जानना चाहते हैं कि उचित क्या है । यदि अनुचित विकास नीतियों व परियोजनाओं के विरोध के साथ सही विकल्प तलाशने को भी उतना ही महत्व दिया जाए तो एक ऐसा माहौल बनेगा जिसमें अधिक लोग पर्यावरण आन्दोलन से जुड़ेंगे । इसमें कोई संदेह नहीं है कि लोगों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने को उच्चतम प्राथमिकता मिलनी चाहिए । यह सवाल पश्चिमी देशों के पर्यावरण आन्दोलन के लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि वहां पहले ही अधिकांश लोगों की बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो रही हैं पर भारत जैसे देशों में यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है जहां अधिकांश लोगों की बुनियादी ज़रूरतें अभी संतोषजनक ढंग से पूरी नहीं हो रही है ।

जलवायु बदलाव की समस्या के ऐसे समाधान को ही व्यापक जनसमर्थन मिल सकेगा । पर्यावरण रक्षा को न्याय से जोड़ने की व्यावहारिक अभिव्यक्ति हमें जलवायु बदलाव की सबसे गंभीर समस्या के संदर्भ में तलाशनी है । यह एक बहुत ज़रूरी कार्य है जिसमें आज ज़रा भी देर नहीं होनी चाहिए ।

इन बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने की अनेक राह हो सकती हैं, अनेक तकनीकें हो सकती है । यह एक बहुत रचनात्मक चुनौती हमारे सामने है कि पर्यावरण की रक्षा की दृष्टि से एवं इससे जुड़े हुए अन्य सार्थक दृष्टिकोण से कौन-सी राह व तकनीकी सबसे उचित है । विभिन्न स्थानों की ज़रूरतों और परिस्थितियों के अनुसार वहां के लिए कौन-सी तकनीक व राह उचित है, इस बारे में बहुत विकेन्द्रित प्रचार ज़रूरी है । उदाहरण के लिए ऊर्जा के क्षेत्र में मौजूदा बड़े ताप बिजलीघरों, बड़े बांधों व परमाणु संयंत्रों के स्थान पर फासिल फ्रयूल का उपयोग न करने वाले अक्षय ऊर्जा स्रोतों की बहुत सार्थक भूमिका हो सकती है । यह हर जगह कुछ हद तक संभव है पर महानगरों को अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में व नये विकसित हो रहे शहरों में इनकी संभावना और भी अधिक है । अक्षय ऊर्जा स्रोत कई तरह के हैं ।

यह एक बहुत रचनात्मक कार्य है कि विभिन्न स्थितियों में किस तरह का अक्षय ऊर्जा सिस्टम आगे बढ़ाया जाए जो स्थानीय संभावनाओं व ज़रूरतों के सबसे अनुकूल हो । कुछ अक्षय ऊर्जा स्रोत अभी महंगे हैं अत: उनके ख़र्च को कम करना एक अन्य चुनौती है ।

कुछ अक्षय ऊर्जा स्रोतों का भी अनुचित उपयोग आरंभ हो गया है व उसे उचित समय पर रोकना ज़रूरी है । इसी तरह खाद्य उत्पादन में ऐसे विकल्प मौजूद हैं जो रासायनिक खाद, कीटनाशक, खरपतवारनाशक आदि दवाओं व जी॰एम॰ फ़सलों के गंभीर पर्यावरणीय दुष्परिणामों से हमारी रक्षा कर सकते हैं । साथ में वे किसानों के ख़र्च को कम करने व उन्हें अधिक आत्म-निर्भर करने में अधिक मदद कर सकते हैं ।

इस तरह के आत्म-निर्भर उपायों से किसानों की रचनात्मकता को बहुत उभरने का अवसर मिलता है, क्योंकि उन्हें स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग करने की तमाम संभावनाएं तलाशनी होती हैं । सिंचाई में ख़र्च कम करने के

साथ उपयोगिता बढ़ाने के कई सुझाव उपलब्ध हैं जो पर्यावरण की रक्षा में कहीं अधिक सक्षम भी हैं । कपड़े के उत्पादन में ऐसे विकल्प उपलब्ध हैं जो देसी कपास के उत्पादन से हथकरघे पर कपड़े के उत्पादन तक हर स्तर पर पर्यावरण की रक्षा करते हैं । इस कार्य को जमाने की संभावनाएं अब बहुत कम देशों में बची हैं और इनमें भारत एक प्रमुख देश है । जिस तरह विश्व में पर्यावरण की चेतना फैल रही है तो उस कपड़े को विशेष महत्व मिलेगा जिससे हर स्तर पर पर्यावरण की रक्षा होती है । तो क्यों नहीं हम पर्यावरण की रक्षा पर आधारित कपड़े के उत्पादन को आगे बढ़ाएं, जिससे अधिक रोज़गार का सृजन भी होता है ।

इस तरह जो पर्यावरण की रक्षा से बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने की राह है वह एक बेहद रचनात्मक व क्रीएटिव राह है । इससे अधिक लोगों को जुड़ना चाहिए । साथ में पर्यावरण की रक्षा के लिए यह ज़रूरी है कि समता और सादगी के आदर्श को अपनाया जाए व इसका अधिक प्रचार किया जाए ताकि विषमता व विलास की राह से जुड़ा पर्यावरण विनाश रोका जा सके । इसके साथ जुड़ा एक मुद्दा यह है कि पर्यावरण आन्दोलन अकेले न पड़े अपितु समता व न्याय पर आधारित अधिक व्यापक आन्दोलन का हिस्सा बने या उससे सही सामंजस्य बनाएं । विश्व स्तर पर पर्यावरण के आन्दोलन का जन-आधार इस कारण व्यापक नहीं हो सका है क्योंकि इसमें न्याय व समता के मुद्दों का उचित ढंग से समावेश नहीं हो पाया है ।

आज के विश्व में बहुत व्यापक, गहरी निष्ठा के साथ अहिंसक जनआन्दोलनों की इतनी ज़रूरत है जितनी कि मानव-इतिहास में पहले कभी नहीं थी । यह इस कारण है कि हम इतिहास के सबसे नाज़ुक दौर से गुज़र रहे हैं, जब मानव-निर्मित कारणों से मनुष्य व अन्य जीवन-रूपों के लिए अस्तित्व मात्र का ख़तरा उत्पन्न हो रहा है व धरती की जीवन-दायिनी क्षमता ही स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त होने के ख़तरे में है ।

वैसे पर्यावरण आन्दोलन को मज़बूत करने के लिए पहले भी कई अन्य संदर्भों में यह कहा गया है कि पर्यावरण की रक्षा के साथ न्याय व जन-अधिकारों को जोड़ा जाए । उदाहरण के लिए यह कई बार कहा गया है कि वनों की रक्षा के मांग के साथ लघु वन-उपज पर आदिवासियों की हक़दारी की मांग को जोड़ा जाए । अब जलवायु बदलाव की समस्या पर्यावरण की सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभर रही है तो इसके समाधान में भी न्याय व समता के मुद्दों का ऐसा समावेश ज़रूरी है जिससे दुनिया के करोड़ों लोग इस समस्या के समाधान से जुड़ सकें । समाधान ऐसा होना चाहिए जो इन सब लोगों को ग़रीबी व अभाव से भी राहत दिलाये ।

जलवायु बदलाव की समस्या के ऐसे समाधान को ही व्यापक जनसमर्थन मिल सकेगा । पर्यावरण रक्षा को न्याय से जोड़ने की व्यावहारिक अभिव्यक्ति हमें जलवायु बदलाव की सबसे गंभीर समस्या के संदर्भ में तलाशनी है । यह एक बहुत ज़रूरी कार्य है जिसमें आज ज़रा भी देर नहीं होनी चाहिए । पहले ही बहुत देर हो चुकी है । इस उद्देश्य को प्राप्त करने का सबसे असरदार तरीक़ा यह है कि विश्व स्तर पर ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में पर्याप्त कमी उचित समय-अवधि में लाए जाने की ऐसी योजना बनायी जाए जो सभी लोगों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने से जुड़ी हो व फिर इस योजना को क्रियान्वित करने की दिशा में तेज़ी से बढ़ा जाए । यदि इस तरह की योजना बनाकर कार्य होगा तो ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कमी के ज़रूरी लक्ष्य के साथ-साथ करोड़ों अभावग्रस्त लोगों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने का लक्ष्य अनिवार्य तौर पर जुड़ जाएगा, व इस तरह ऐसी योजना के लिए करोड़ों लोगों का उत्साहवर्धक समर्थन प्राप्त हो सकेगा ।

ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए कुछ हद तक हम फॉसिल ईंधन के स्थान पर अक्षय ऊर्जा (जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा) का उपयोग कर सकते हैं, पर केवल यह पर्याप्त नहीं है । यदि ग़रीब लोगों के लिए ज़रूरी उत्पादन बढ़ाना है तो उसके लिए ज़रूरी प्राकृतिक संसाधन व कार्बन स्पेस प्राप्त करने के लिए साथ ही यह ज़रूरी हो जाता है कि विलासिता की वस्तुओं व ग़ैर-ज़रूरी वस्तुओं

का उत्पादन कम किया जाए । यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । अत: यह बहुत ज़रूरी है कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की योजना से विश्व के सभी लोगों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने की योजना को जोड़ दिया जाए व उपलब्ध कार्बन स्पेस में बुनियादी ज़रूरतों को प्राथमिकता देना एक अनिवार्यता बना दिया जाए ।

इस योजना के तहत जब ग़ैर-ज़रूरी उत्पादों को प्राथमिकता से हटाया जाएगा तो यह ज़रूरी बात है कि सब तरह के हथियारों के उत्पादन में बहुत कमी लायी जाएगी । मनुष्य व अन्य जीवों की भलाई की दृष्टि से देखें तो हथियार न केवल सबसे अधिक ग़ैर-ज़रूरी हैं अपितु सबसे अधिक हानिकारक हैं । इसी तरह अनेक हानिकारक उत्पाद हैं (शराब, सिगरेट, कुछ बेहद ख़तरनाक केमिकल्स आदि) जिनके उत्पादन को कम करना ज़रूरी है । इस तरह की योजना पर्यावरण आन्दोलन को न्याय व समता आन्दोलन के नज़दीक लाती है व साथ ही इन दोनों आन्दोलनों को शांति आन्दोलन के नज़दीक लाती है । यह तीनों सरोकार एक होंगे तो दुनिया की भलाई के कई महत्वपूर्ण कार्य आगे बढ़ेंगे ।

आज के विश्व में बहुत व्यापक, गहरी निष्ठा के साथ अहिंसक जनआन्दोलनों की इतनी ज़रूरत है जितनी कि मानव-इतिहास में पहले कभी नहीं थी । यह इस कारण है कि हम इतिहास के सबसे नाज़ुक दौर से गुज़र रहे हैं, जब मानव-निर्मित कारणों से मनुष्य व अन्य जीवन-रूपों के लिए अस्तित्व मात्र का ख़तरा उत्पन्न हो रहा है व धरती की जीवनदायिनी क्षमता ही स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त होने के ख़तरे में है । इस स्थिति में यह बहुत ज़रूरी है कि न्याय, समता, पर्यावरण की रक्षा, सब जीवों के धरती पर रहने के अधिकार जैसे शाश्वत जीवन मूल्यों में जिन लोगों की गहरी निष्ठा है, वे आपसी भेदभाव को दूर कर धरती व इस पर रहने वाले जीवों की रक्षा के लिए व्यापक एकता स्थापित करें व संगठित होकर एक-दूसरे का सहारा बन जाएं । जो आन्दोलन या संगठन आर्थिक समता व सामाजिक न्याय के लिए प्रयासरत हैं वे पर्यावरण रक्षा के आन्दोलन से अलग नहीं हैं ।

दोनों आन्दोलनों का मूल उद्देश्य दुख-दर्द कम करना है । भेदभाव तब उत्पन्न होते हैं जब मुद्दे ग़लत ढंग से रखे जाते हैं या जब निहित स्वार्थ जान-बूझकर भेदभाव भड़काते हैं । इसी तरह शांति आन्दोलन भी नज़दीकी तौर पर दोनों आन्दोलनों से जुड़ा है । विध्वंसक युद्ध होते रहे तो बाक़ी सब सार्थक उद्देश्य पीछे छूट जाएंगे ।

शांति आन्दोलन को भी पता है कि विषमता बढ़ती गयी व प्राकृतिक संसाधन लुटते रहे तो युद्ध की संभावना बढ़ेगी । अत: इसमें कोई संदेह ही नहीं कि यह सब उद्देश्य आपस में नज़दीकी तौर पर जुड़े हैं व सब जन-आन्दोलनों की व्यापक एकता बनाकर आगे बढ़ना चाहिए । (वि॰फ़ी॰)



हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरो	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

नैतिक मूल्यों, संस्कारों और संस्कृति से नाता तोड़ती युवा पीढ़ी

■ सी॰ के॰ रहमानी

समय दिन में सवा 12 का रहा होगा । गुनगुनी धूप में घर से दफ़्तर के लिए निकला । लोकल बाज़ार में कुछ काम था इसलिए उधर से जाने का तय किया । बहू को भी मेरे दफ़्तर के पास ही नौकरी के लिए जाना होता है इसलिए उसे भी वहां छोड़ना था । वह बाइक पर पीछे बैठी थी । कई दिन से बुख़ार था इसलिए तबियत भी अच्छी नहीं थी लेकिन आफ़िस तो जाना ही था । बाज़ार में बाइक की रफ़्तार कोई 15 किलोमीटर प्रतिघंटा रही होगी । यूं भी तेज़ बाइक चलाने की मुझे आदत नहीं है । फिर यह तो बाज़ार था ।

दुकानें अभी पूरी तरह खुली नहीं थी और बाज़ार में भीड़ नहीं थी । दिल्ली के बाज़ारों में यूं भी रौनक़ और भीड़ दोपहर बाद या फिर शाम के समय होती है । बाज़ार की सड़क पर चला जा रहा था तभी सामने से बाइक पर 13-14 साल का एक लड़का आया और अचानक मेरी साइड में मुड़ गया । उसकी बाइक पर दो बच्चे पीछे बैठे थे । संभला और उस लड़के से इसलिए पूछा कि वह ग़लत दिशा में अचानक आ गया था, मुझे भी चोट लगती और उसकी बाइक पर बैठे छोटे बच्चों को भी, सो मैंने पूछा किधर जा रहा है ?

इतना बड़ा-बड़ा चश्मा लगा रखा है फिर भी 'तुझे' दिखायी नहीं दे रहा कि मैं किधर जा रहा हूं चल निकल ।'

उसकी भाषा और बॉडी लैग्वेज फ़िल्मी खलनायक की तरह थी । उसका अप्रत्याशित जवाब सुनकर मैं सन्न रह गया । बहू ने प्रतिरोध किया 'तुझे बड़ों से बात करने की तमीज़ नहीं है ।.वह बोला 'चल निकल' । कुछ ही सेकेंड में मैंने सोचा यदि लड़के को चपत लगाता हूं तो भीड़ जमा हो जाएगी । मेरे साथ-साथ बहू भी लेट होगी । बखेड़ा खड़ा करने का कोई फ़ायदा नहीं था क्योंकि जो भीड़ इकट्ठी होती वह भी यही कहेगी आप बड़े हैं समझदार हैं क्यों बच्चे के मुंह लगते हो । ऐसे मौक़ों पर हम लोगों को यही कहते हैं ।

ऑफ़िस जाते समय रास्ते भर कई सवाल दिमाग़ में उठते रहे । इस उद्दंडता, अशिष्टता, बदतमीज़ी, संस्कारविहीन व्यवहार के लिए क्या वह अकेला बालक ही दोषी है या फिर इसके लिए हम सब और हमारा समाज ज़िम्मेदार है । आमतौर पर हम पश्चिमी देशों पर निशाना साधते हैं । छाती पीटते हैं कि पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति ने सब बंटाधार कर दिया । अपनी कमी को दूसरे के सिर मढ़ने में यूं भी हमारा कोई जवाब नहीं है । सवाल उठा कि क्या हमने अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा और संस्कार देना बंद कर दिया है ? या हम ख़ुद संस्कारविहीन हो गये हैं जो बच्चों को नहीं दे पा रहे हैं ? क्या ऐसे ही समाज निर्माण के बल पर नारा लगाते हैं कि हमारा भारत महान ?

सवाल लगातार पीछा कर रहे थे । क्या शिक्षक अपना दायित्व नहीं निभा पा रहे हैं ? क्या उन्होंने संस्कारित शिक्षा देना बंद कर दिया है या फिर वह जो शिक्षा दे रहे हैं वह सिर्फ़ नौकरी पाने के लिए है । क्या हम हिंसा और गुंडागर्दी का समर्थन करने लगे हैं ?

सवाल लगातार पीछा कर रहे थे । क्या शिक्षक अपना दायित्व नहीं निभा पा रहे हैं ? क्या उन्होंने संस्कारित शिक्षा देना बंद कर दिया है या फिर वह जो शिक्षा दे रहे हैं वह सिर्फ़ नौकरी पाने के लिए है । क्या हम हिंसा और गुंडागर्दी का समर्थन करने लगे हैं ? संस्कारों की जड़ों में जो दीमक लग रही है क्या हम आधुनिकता और भौतिकवाद की आपाधापी में देख नहीं पा रहे हैं । अधिक पैसा कमाने की

होड़ में हम बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पा रहे हैं । या फिर हम यह मानने लगे हैं कि घर में एक-दो बच्चा झगड़ालू, गुंडा-बदमाश होना चाहिए ताकि मुहल्ले में दबदबा बना रहे । ऐसे सवाल रास्ते भर अपने आप से करता रहा, लेकिन कोई जवाब मुझे नहीं मिल पाया ।

अचानक मैं 45 साल पीछे अतीत में चला गया । जब आठवीं कक्षा में पढ़ रहा हूंगा । वह क्या समय था जब घर के बड़ों के सामने आंख मिलाकर बात करने की हिम्मत नहीं होती थी । पिता जी से बात करते हुए डर लगता था । चाचा से डर-डरकर बात करते थे । किसी चीज़ की ज़रूरत होती थी पिता जी से कहने की हिम्मत नहीं होती थी । मां के कान में कहते थे । मां पिता जी से कहती तब जाकर मांग पूरी होती और कभी-कभी वह भी नहीं । पिता जी ने जो कह दिया वह अंतिम फ़ैसला होता था । यह फ़ैसला हां भी हो सकता था और न भी । यह मामला घर तक सीमित नहीं था, क्योंकि पूरा गांव रिश्ते की डोर में बंधा होता था । संस्कार ऐसे मिले कि छोटों को बड़ों से डरना ही होता था । उनका सम्मान करना लाज़िमी था । किसी भी जाति का पुरुष या महिला हो गांव के नाते उससे कोई न कोई रिश्ता होता था । कोई चाचा लगता है तो कोई ताऊ, कोई भाई लगता तो कोई दादा । कोई बहन लगती तो कोई बुआ । इस तरह पूरा गांव अपनापन से जुड़ा रहता । उस समय युवकों और किशोरों में नशे की लत नहीं थी । जहां तक मुझे याद आ रहा है पूरे गांव में सिर्फ़ दो व्यक्ति शराब पीते थे और वह भी कभी-कभार । यह बात भी इसलिए पता थी कि घर और बाहर उन दो लोगों की बुराई के रूप में चर्चा होती रहती थी । उनके प्रति सामाजिक बहिष्कार का आलम यह था कि गांव का कोई भी आदमी उनसे बात नहीं करना चाहता था । वह ख़ुद आकर बात करने लगते तो मजबूरी में लोग हां-ना कर देते थे । कुछ युवक नशे के नाम पर बीड़ी पीते थे और बड़े बूढ़े हुक़्क़ा । युवकों किशोरों में आदर सम्मान का आलम यह था बीड़ी भी चोरी छिपे पीते थे । बीड़ी पी रहा युवक अगर दूर से अपने गांव के आदमी को आता देख लेता तो फ़ौरन बीड़ी फेंक देता था और ऐसा महसूस कराता था कि वह कुछ नहीं कर रहा था । यहां जाति और संप्रदाय का सवाल नहीं था । सवाल बड़े-छोटे का था । अगर किसी ने किसी लड़के की घर जाकर शिकायत कर दी तो समझो उसकी ख़ैर नहीं ।

आज उस किशोर ने जो बर्ताव किया वह अपने आप में पहली और आख़िरी घटना नहीं है । अमर्यादित व्यवहार शहरों में आम होता जा रहा है । मेरे बेटे ने बताया कि जब वह आठवीं कक्षा में था तो अध्यापक ने किसी छात्र को दो चपत लगा दी थी । इसके बाद वह छात्र अपनी सीट पर बैठा फिर खड़ा होकर कहने लगा 'सर आज आप किधर होकर जाएंगे ।' टीचर के लिए अप्रत्याशित सवाल था इसलिए उसने पूछा 'क्या करेगा ।' उसने उद्दंडता से जवाब दिया 'सर आज आपकी पिटाई करनी है ।' पहले शिक्षकों के प्रति पूरा सम्मान था । पिटाई पर न तो छात्र बग़ावत करता था न घर वाले टीचर से कुछ कहते थे । बदलते दौर में गुरु शिष्य परंपरा तो ख़त्म ही हो चली है । सब कुछ प्रोफेशनल हो गया है । शायद यही कारण है कि टीचर भी उसी तरह हो रहे हैं । इसका असर भी सीधा बच्चों पर पड़ रहा है ।

वह वक़्त भी था जब खेतों की मेंड़ पर कॉलेज की तरफ़ दौड़े चले जा रहे होते और रास्ते में किसी टीचर की साइकिल, कोई महिला, लड़की, गांव का अपने से बड़ा आदमी दिखायी देता तो मेंड़ छोड़कर एक तरफ़ खड़े हो जाते थे । हां इतना ज़रूर होता था कि किसी खेत से रास्ता चलते मटर की फलीं तोड़ लीं । बाग़ का रखवाला दूसरी तरफ़ होता तो कभी बेर तोड़ लिये । इस तरह की शरारत तो होतीं थीं मगर बड़ों के सम्मान को चोट नहीं पहुंचाई जाती थी । आज छात्र इठलैंया करता बीच रास्ते में चलता है और जल्दी हठने का नाम नहीं लेता है ।

बेटा ने मां का क़त्ल कर दिया । जायदाद के लिए पुत्र ने पिता को मार डाला । भाई ने बहन की हत्या कर दी या बहन ने भाई के नाम की सुपारी दे दी । इस तरह की ख़बरें आये दिन पढ़ने को मिलती रहती हैं । यह क्या है ? पहले ऐसी ख़बरें दस बीस-साल में कभी-कभी सुनने को मिलती थी और उसकी चर्चा सालों रहती थी । लेकिन आज हम ऐसी ख़बरों को सामान्य मानकर आगे बढ़ जाते हैं । यह नैतिक पतन नहीं तो क्या है ? कुछ लोग मेरी बात को पीढ़ियों का टकराव कह सकते हैं । इसे बुर्जुआ ख़यालात बता सकते हैं । यह तर्क भी दे सकते हैं कि पुरानी पीढ़ी हमेशा नयी पीढ़ी में कमी निकालती रही है । ऐसा होता भी रहा है । लेकिन यह बेवजह नहीं है । बदलाव प्रकृति का नियम है लेकिन ऐसा बदलाव और आधुनिकता किस काम की जिसमें संस्कार ही दम तोड़ दें ।

हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) की जीवनी

हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	12.00
प्यारे नबी कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली	20.00
प्यारे नबी ऐसे थे !	माइल ख़ैराबादी	10.00
जगत-गुरु	अबू ख़ालिद	40.00
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मु० इनायतुल्लाह सुब्हानी	115.00
बड़ों की माँए	माइल ख़ैराबादी	12.00
रह्मतुल-लिल-आलमीन	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
विश्व-नायक	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	36.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद : एक संक्षिप्त परिचय	डॉ० मुहम्मद अहमद	06.00
हज़रत मुहम्मद एक महान समाज सुधारक	प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	10.00
हज़रत मुहम्मद का आदर्श	श्री नाथूराम	16.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल०के संदेशों के मूल तत्त्व	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	04.00
आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	06.00
अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	10.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	नईम सिद्दीक़ी	70.00

परिवार इस्लाम की नज़र में

औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम और बर्थ कंट्रोल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
नारी और इस्लाम	मक़बूल अहमद फ़लाही	06.00
परदा	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	100.00
परिवार इस्लाम की नज़र में	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
बहुविवाह	मौलाना सय्यद हामिद अली	50.00
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी	28.00
मुस्लिम पर्सनल ला और समान सिविल कोड	शम्स पीरज़ादा	12.00
मुस्लिम पर्सनल ला धार्मिक व सामुदायिक...	मौलाना सबरुद्दीन इस्लाही	10.00
मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा समस्या...	उमर अफ़ज़ल	40.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

वर्तमान परिस्थितियां और मुसलमान

■ इंजीनियर मुहम्मद सलीम

हालिया लोकसभा चुनाव और उसके परिणाम के बाद देश में नयी केन्द्र सरकार का गठन हुआ । बदले हुए राजनीतिक हालात में देश के एक वर्ग में आशा और उल्लास है वहीं एक बहुत बड़े वर्ग में देश के भविष्य के बारे में निराशा और चिंता पायी जाती है । विशेष रूप से लोकतंत्र, मानवाधिकार और मूल्यों के लिए काम करने वाले लोग और संगठन इसके अलावा धार्मिक अल्पसंख्यक विशेष रूप से मुसलमान और ईसाई । मुसलमानों में इस परिवर्तन से निराशा स्वाभाविक थी, अब भी पायी जाती है, मगर समय बीतने के साथ-साथ इसमें कमी आ रही है ।

मुसलमानों की इस स्थिति का कारण यह भी था कि वही कुछ घटित हो गया, जिसे वे हर क़ीमत पर रोकना चाहते थे । मुसलमानों ने इसके लिए हर संभव प्रयास भी किये, मगर परिणाम उनकी इच्छा और अपेक्षा के विपरीत आये । पिछले एक महीने से लगातार समीक्षाएं आ रही हैं और इसके विभिन्न पहलू हमारे सामने आ रहे हैं । अब हमें समीक्षाओं से आगे बढ़कर इस पर विचार करना चाहिए कि आगे क्या-क्या हो सकता है । इसके अच्छे और बुरे पहलू कौन-कौन से हो सकते हैं, देश किस दिशा में जाएगा, समाज में क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं और इन हालात को सही दिशा देने में हमारी भूमिका किस तरह प्रभावशाली हो सकती है ।

इन हालात में यह बात ठीक से समझने की है कि ये चुनाव कोई सत्य और असत्य की लड़ाई नहीं थे और न ही कोई पक्ष ऐसा था जो सत्य पर हो और हम उसे सफल बनाना चाहते हों । असत्य की शक्तियों में सत्ता के लिए संघर्ष था और हम चाहते थे कि इस देश के लिए, विशेष रूप से मुसलमानों के लिए, जो सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है वह केन्द्रीय सत्ता पर क़ाबिज़ न होने पाये । हमारी इच्छा और हमारे प्रयासों के बावजूद परिणाम हमारी अपेक्षा के विपरीत आये । अल्लाह का फ़ैसला और उसकी मर्ज़ी है, हम नहीं जानते कि इसमें भलाई का कौन-सा पहलू छिपा हुआ है । वह समय आने पर पता चलेगा । अल्लाह कहता है–

"हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें अप्रिय हो और वही तुम्हारे लिए बेहतर है और हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो । अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते ।" (कुरआन, 2:216)

इस परिवर्तन के माध्यम से अल्लाह का उद्देश्य क्या है, यह तो उसी को मालूम है, लेकिन यह ईमान और यक़ीन है कि जो कुछ हो रहा है उसकी योजना के अंतर्गत ही हो रहा है, जिसमें अंततः जीत उसी गिरोह की होगी जो अल्लाह से डरने वाला हैं । अगर कुछ क्षणिक परीक्षाएं भी आती हैं तो वे भी हमें उस ज़िम्मेदारी को संभालने योग्य बनाने के लिए ही हैं । और हमें पूरा विश्वास है कि अल्लाह किसी पर उसकी सहन शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालता । इन राजनैतिक परिवर्तनों से परेशान और निराश होने का कोई कारण भी नहीं है । निराशा के लिए इस्लाम में कोई जगह

वे राजनीतिक दल जो साम्प्रदायिक विचारधारा के विरुद्ध हैं उन्हें भी यह समझाने की कोशिश की जानी चाहिए कि अपने हितों से ऊपर उठकर और पिछले चुनावी परिणामों से सबक़ लेकर देश को घातक रास्ते पर जाने से रोकना उनकी प्राथमिकता बन जाए । अगर ऐसा करने में ये पार्टियां असफल रही या कुछ समय और यूं ही गंवा दिया तो साम्प्रदायिकता और फासीवाद की आंधी इन राजनीतिक दलों के अस्तित्व को भी समाप्त कर सकता है ।

मुसलमान अपने कर्तव्य निभाएं

संविधान की रोशनी में अब यह सरकार किसी एक पार्टी की सरकार नहीं, बल्कि अब यह देश के सभी नागरिकों की सरकार है । इस देश के संविधान के अनुसार ही सरकार को अपने काम करने होंगे । यह हम सभी नागरिकों की ज़िम्मेदारी है कि वे सरकार पर नज़र रखें और अगर यह सरकार कहीं इस संविधान के विरुद्ध काम करने की कोशिश करती है तो उसको रोकना और टोकना आम नागरिकों और हम मुसलमानों का भी दायित्व है ।

नहीं है । ईमान वाला तो हर हाल में कामयाब है । चाहे हालात उसकी पसन्द के अनुसार हों या उसके विपरीत । पहली हालत में अल्लाह का शुक्र अदा करके उसे राज़ी किया जाए और दूसरी हालत में धैर्य से काम लेकर कामयाबी के मार्ग पर आगे बढ़ा जाए ।

चुनाव के इन परिणामों को बाहरी कारकों के आधार पर समझने की अगर कोशिश की जाए तो जो बात समझ में आती है वह यह है कि इन चुनावों में साम्प्रदायिक और फॉसीवादी शक्तियों और पूंजीवादी एवं साम्राज्यवादी शक्तियों ने मिलकर अपना-अपना हित साधने के लिए एक-दूसरे का साथ दिया और अब ये दोनों शक्तियां पूरा प्रयास करेंगी कि अपने-अपने एजेंडे को पूरा करें । दूसरी ओर मीडिया की असाधारण भूमिका वास्तव में कारपोरेट जगत की ही भूमिका थी । तीसरा बड़ा कारण सत्ताधारी यू०पी०ए० के विरुद्ध विभिन्न कारणों से नाराज़गी और उसे मीडिया द्वारा और अधिक बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया । विशेष रूप से मुसलमानों में यू०पी०ए० के ख़िलाफ़ नाराज़गी इस कारण थी कि मुसलमानों की समस्याओं के समाधान को लेकर सरकार का रवैया ग़ैर-ज़िम्मेदाराना था और आतंकवाद के नाम पर मुस्लिम नवजवानों की गिरफ़्तारियां भी एक बड़ा कारण था, जिसके कारण मुसलमान कांग्रेस पार्टी से बहुत नाराज़ थे और इसकी कोशिश में रहे कि जहां कहीं भी उनको साम्प्रदायिक और फॉसीवादी शक्तियों को हराने वाला कोई विकल्प मौजूद था उसका समर्थन किया जाए ।

वर्तमान चुनावों में भाजपा की बड़ी सफलता का एक कारण उसकी पीठ पर खड़ा आर०एस०एस० का कैडर था, जिसने इन चुनावों में अपनी पूरी शक्ति लगा दी और इन चुनावों को आरपार की लड़ाई के रूप में लड़ा । आर०एस०एस० और भाजपा के कार्यकर्ताओं ने इन चुनावों में असाधारण मेहनत भी की और बूथ लेवल की बहुत योजना भी बनायी ताकि भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक वोट प्राप्त किया जाए । नवजवानों और पहली बार वोट डालने वालों को विशेष रूप से निशाना बनाया गया । एक और महत्वपूर्ण पहलू इन चुनावों का यह रहा कि भाजपा ने इस तरह की योजना भी बनायी कि भाजपा विरोधी सेकुलर वोट विभाजित हो जाए और वह इसमें सफल भी रही । इस तरह भाजपा केवल 31 प्रतिशत वोट प्राप्त करके ही संसद में बहुमत प्राप्त करने वाली इकलौती पार्टी बन गयी । भाजपा को मिलने वाला वोट कुल रजिस्टर्ड वोट का केवल 21 प्रतिशत है और उसमें भी हिन्दुत्व के आधार पर वोट करने वाले 15 प्रतिशत से अधिक नहीं हैं । यह बात समझ में आती है कि अब भी 85 प्रतिशत जनता उनके दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करती है जो एक आशा का पहलू है ।

हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है और इसका एक संविधान है । यहां सरकार एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से बनती है । संविधान की रोशनी में अब यह सरकार किसी एक पार्टी की सरकार नहीं, बल्कि अब यह देश के सभी नागरिकों की सरकार है । इस देश के संविधान

के अनुसार ही सरकार को अपने काम करने होंगे । यह हम सभी नागरिकों की ज़िम्मेदारी है कि वे सरकार पर नज़र रखें और अगर यह सरकार कहीं इस संविधान के विरुद्ध काम करने की कोशिश करती है तो उसको रोकना और टोकना आम नागरिकों और हम मुसलमानों का भी दायित्व है । सरकार के अच्छे कामों का समर्थन करना और ग़लत कामों से सरकार को रोकना भी हमारा दायित्व है । हमें चाहिए कि उचित समय पर और जब भी ज़रूरत पड़े हमें भी इस सरकार से बात करनी होगी । इस देश के विकास में हम जो चीज़ सही समझते हैं, इससे भी सरकार को अवगत करते रहना हमारा दायित्व है ।

मुसलमानों की अब तक जो मांगें रही हैं और जिनको अब तक पूरा नहीं किया जा सका वे मांगें भी इस नयी सरकार के सामने अपना अधिकार समझते हुए रखनी होंगी । हमें सरकार पर यह भी स्पष्ट करना होगा कि हर अच्छे काम में हमारा समर्थन रहेगा । सरकार का अब यह दायित्व है कि वह उन आशंकाओं को ग़लत साबित करे जो देश की जनता को विशेष रूप से मुसलमानों को है । हमको पहले से ज़्यादा चौकस रहने की ज़रूरत है ।

चुनाव के इन परिणामों को बाहरी कारकों के आधार पर समझने की अगर कोशिश की जाए तो जो बात समझ में आती है वह यह है कि इन चुनावों में साम्प्रदायिक और फॉसीवादी शक्तियों और पूंजीवादी एवं साम्राज्यवादी शक्तियों ने मिलकर अपना-अपना हित साधने के लिए एक-दूसरे का साथ दिया और अब ये दोनों शक्तियां पूरा प्रयास करेंगी कि अपने-अपने एजेंडे को पूरा करें ।

इस मिथक को परवान नहीं चढ़ने देना चाहिए कि मुसलमान इस देश में शासित हैं और बहुसंख्यक शासक हैं । साम्प्रदायिक और फासीवादी शक्तियां तो चाहती ही यही हैं कि हम इसे स्वीकार कर लें । निश्चित रूप से अन्याय हो रहा है, भेदभाव भी होता है और मुसलमानों के साथ-साथ वर्गों की तुलना में कुछ अधिक ही होता है, लेकिन देश का संविधान अन्याय और भेदभाव से लड़ने की शक्ति भी हमें देता है । हमें न केवल अपने विरुद्ध होने वाले अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानी चाहिए, बल्कि अन्याय को रोकने की भी पूरी कोशिश करनी चाहिए । इससे भी आगे बढ़कर जिस किसी के साथ भी अन्याय हो, किसी का अधिकार हनन हो, किसी पर अत्याचार हो, मुसलमानों को सबसे आगे बढ़कर पीड़ित की मदद करनी चाहिए अत्याचारी का हाथ पकड़ना चाहिए ।

देशवासियों को इस पहलू से भी जागृत करने की आवश्यकता है कि जिन लोगों को हमने अपने वोट के माध्यम से चुनकर विधानसभा और लोकसभा में भेजा है और जो लोग अब सरकार में विभिन्न मंत्रालय और अन्य पद संभाल रहे हैं वे सब हमारे अर्थात जनता के प्रतिनिधि हैं और जनता के प्रति उत्तरदायी हैं । वे जनता के शासक नहीं और न जनता उनकी शासित है । यह बड़ा दुखद है कि आज़ादी के 67 वर्ष बाद भी हमारे देश की जनता इस ग़लत सोच से बाहर नहीं आ सकी है । यह बात देशवासियों को समझाने की ज़रूरत है कि प्रतिनिधि बड़ा नहीं होता उसे चुनने वाली जनता बड़ी होती है । इन प्रतिनिधियों को एक निश्चित अवधि के लिए एक काम सौंपा गया है, जनता का दायित्व है कि वह उस काम पर नज़र रखे कि ठीक ढंग से हो रहा है या नहीं । जनता यह काम जितनी ईमानदारी से करेगी हम अपने प्रतिनिधियों को उतना ही ठीक रख पाएंगे और जनता जितनी लापरवाह होगी देश का उतना ही नुक़सान होगा । हालांकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया से एक ऐसी सरकार का गठन हो गया है, जिसकी पीठ पर साम्प्रदायिक और फासीवादी रुझान रखने वाली न केवल विचारधारा है, बल्कि उसका एक अतीत भी है । इस संभावना को भी पूरी तरह रद्द नहीं करना चाहिए कि वे अपनी विचारधारा में कुछ परिवर्तन ला सकते हैं अगर ऐसा हो तो बड़ा अच्छा होगा । हमें इतना भी सीधा नहीं होना चाहिए कि हम इनके ग़लत इरादों और कर्मों से आंखें मूंद लें । यह न केवल मुसलमानों के लिए बल्कि पूरे देश के लिए घातक होगा । इस देश को

ग़लत राहों पर जाने से रोकना हमारी ज़िम्मेदारी है ।

यह एक सच्चाई है कि देश की एक बड़ी आबादी साम्प्रदायिकता और फासीवाद के विरुद्ध है, उसे एकजुट करना और जो लोग साम्प्रदायिक विचारधारा से प्रभावित हैं उन्हें भी इससे बचाने की कोशिश करना एक अहम काम है ।

देश में बड़ी संख्या में मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए काम करने वाले, देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को मज़बूत करने वाले एवं अन्याय व अत्याचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाले व्यक्तियों और संगठनों की बड़ी संख्या इस देश में मौजूद है, इन्हें एकजुट और संगठित करना और उनके हौसले बढ़ाते रहना इन हालात में ज़्यादा ज़रूरी हो गया है ।

वे राजनीतिक दल जो साम्प्रदायिक विचारधारा के विरुद्ध हैं उन्हें भी यह समझाने की कोशिश की जानी चाहिए कि अपने हितों से ऊपर उठकर और पिछले चुनावी परिणामों से सबक़ लेकर देश को घातक रास्ते पर जाने से रोकना उनकी प्राथमिकता बन जाए । अगर ऐसा करने में ये पार्टियां असफल रही या कुछ समय और यूं ही गंवा दिया तो साम्प्रदायिकता और फासीवाद की आंधी इन राजनीतिक दलों के अस्तित्व को भी समाप्त कर सकता है । हालात ने संभवत: अब इन सेकुलर पार्टियों को भी सोचने पर मजबूर कर दिया होगा इसलिए अगर हम सब मिलकर इसके लिए प्रयास करें तो शायद यह काम आसानी से हो सके ।

इन हालात में भारतीय मुसलमानों को एकजुट और संगठित करने की कोशिश भी तेज़ की जानी चाहिए । एकजुटता का आधार केवल इस्लाम ही हो सकता है । जो लोग डर गये हैं उन्हें इस्लामी शिक्षाओं के आधार पर हौसला देने और खड़ा करने की ज़रूरत है । हालात से प्रभावित होकर कुछ मुसलमान और कुछ उलमा भी सत्ताधारी पार्टी से निकटता बढ़ाने में अपना हित देख रहे हैं । ऐसे लोगों को पूरे इख़्लास के साथ समझाने की ज़रूरत है, उनके साथ सहानुभूति जताना हम सबका दायित्व है ।

इन हालात में हालांकि मीडिया का एक बड़ा हिस्सा कारपोरेट सेक्टर के हाथों बिक गया है या फिर उनका ग़ुलाम हो गया है, लेकिन अभी भी मीडिया का एक हिस्सा ऐसा मौजूद है जो सच्चाई और न्याय की आवाज़ उठाने में सहायक हो सकता है । उसे मज़बूत करने और उसकी मदद से न्याय की आवाज़ उठाने की कोशिश की जानी चाहिए । मीडिया का वह हिस्सा जो पूंजीपतियों के इशारे पर काम कर रहा है अगर कोशिश की जाए तो उसमें भी कुछ न कुछ जगह बनायी जा सकती है ।

एक ऐसा मीडिया भी है जो जनता के हाथों में है और बड़ी हद तक आज़ाद है वह है इंटरनेट और सोशल मीडिया । इस मीडिया से ज़्यादा से ज़्यादा लाभ उठाने की कोशिश की जानी चाहिए । यह एक ऐसा माध्यम है जिससे करोड़ों नवजवान जुड़े हैं और एक बड़ी आबादी तक इसके माध्यम से अपनी बात पहुंचायी जा सकती है ।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मुसलमान इस देश में अपनी हैसियत को पहचानें । वे एक दाई गिरोह हैं अर्थात वे भलाई को फैलाने और बुराई को मिटाने के लिए दुनिया में भेजे गये हैं । इसके लिए जो गुण अपेक्षित हैं, हमें अपने अन्दर वे गुण पैदा करने चाहिए । सारे देशवासियों तक बिना किसी भेदभाव के उनके साथ पूरी सहानुभूति का प्रदर्शन करते हुए बिना किसी झिझक के इस्लाम का आह्वान पहुंचाने की ज़रूरत है । इसके लिए मुसलमानों को तैयार करना हमारी वरीयता सूची में सबसे ऊपर होना चाहिए । एक आवाहक गिरोह होने के नाते हमारी ज़िम्मेदारी तो यह भी है कि हम साम्प्रदायिक और फासीवादी सोच रखने वालों तक भी रब का पैग़ाम पहुंचाए ।

हमारा दायित्व है कि हम जनता की समस्याओं में रुचि दिखाएं उनकी समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास करें । पीड़ित, प्रताड़ित और शोषित को उनके अधिकार दिलवाने के प्रयास करें । हम अपने इन प्रयासों को इस प्रकार करें कि लोगों पर यह स्पष्ट हो जाए कि हम उनके वास्तविक शुभचिंतक हैं । देश की जनता को हम इस तरह पुकारें जिस तरह अल्लाह के पैग़म्बरों ने अपने लोगों को पुकारा । ये हालात हमारी दावती कोशिशों में ज़्यादा मददगार साबित होंगे और हमारे इस पहलू से प्रशिक्षण का भी माध्यम बनेंगे । इसके लिए हमें अल्लाह से दुआ भी करते रहना चाहिए कि अल्लाह इस देश को यहां की जनता को दुनिया और आख़िरत के सभी ख़तरों से सुरक्षित रखे ।

گونگے، بہرے و نابینہ اَفراد کا منفرد فلاحی اِدارہ

IDEAL INFORMATION CENTRE FOR DISABLED (IICD) Regd.

Azampura, Hyd-24 A.P.

IICD Hyderabad — IDEAL INFORMATION CENTRE FOR DISABLED

ESTD-2007









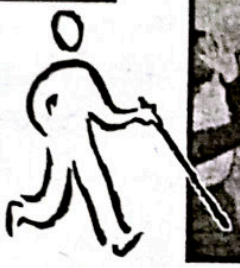

- گونگے بہرے افراد میں ہفتہ واری دینی اجتماع کے ذریعہ دین اسلام کا صحیح فہم اور شعور بیدار کیا جاتا ہے۔
- امسال IICD کی دعوت افطار پر 550 مسلم و 450 غیر مسلم افراد نے شرکت کی۔
- ۲۰۰۸ء میں ایجوکیشنل و کمپیوٹر انسٹیٹیوٹ قائم کیا گیا۔ قابل اساتذہ کی خدمات لی جاتی ہیں! جس میں اُردو، عربی، انگلش و انگلش گرامر، ریاضیات، سائنس، اخلاقی تعلیم دی جاتی ہے۔
- JOB ORIENTED COMPUTER COURSES اس مسابقتی دور میں گونگے بہرے افراد کو خود مکتفی ہونے کیلئے ادارہ نے اپنے قیام کے قلیل مدت میں اعلیٰ کورسس کی تعلیم کا انتظام کیا گیا ہے۔
- IICD کا منصوبہ میں شامل Deaf اسکول کے لیے Govt. Recognisation کی کاروائی کا آغاز کیا جاچکا ہے عنقریب اس کا تکمیلہ ممکن ہوگا (انشاءاللہ)۔

اپیل برائے تعاون اہل مخیّر حضرات کی خدمت میں عرضداشت :

چک اور ڈرافٹ پر صرف "IDEAL INFORMATION CENTRE FOR DISABLED" لکھیں۔ اکاؤنٹ نمبر : 3071840059 سنٹرل بنک آف انڈیا، برانچ نور خان بازار، حیدرآباد۔

MICR Code : 500016015 | IFSC Code : CBI No. 282407

ڈاکٹر خالد مبشر الظفر چیرمین IICD، ناظم شہر جماعت اسلامی ہند گریٹر حیدرآباد +91 9866685248	سید تبریز بخشی، سکریٹری +91 9059619641

درج ذیل مراکز پر بھی اپنے عطیات جمع کرواسکتے ہیں

سب ڈپو مرکزی مکتبہ اسلامی (چھتہ بازار) حیدرآباد 040-66710339	عُکاظ کتاب گھر (عکاظ کامپلکس، مہدی پٹنم، حیدرآباد) 040-23535567

آئیڈیل اِنفارمیشن سنٹر فار ڈیزیبلڈ (رجسٹرڈ) 16-7-731، روبرو مسلم میٹرنٹی ہاسپٹل، اعظم پورہ، حیدرآباد۔

Tel & Fax : 040-24527201, +91 9010657201, (SMS Only) - 9291203299

मनोवृत्ति में बदलाव की ज़रूरत

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

पूरी सृष्टि में केवल इन्सान ही ऐसा प्राणी है, जिसे कर्म और इरादे का अधिकार प्राप्त है । वह ईश्वर द्वारा स्रष्ट सभी जीवों और चीज़ों में सर्वश्रेष्ठ है, अत: सृष्टि की बहुत-सी चीज़ें उसके वशीभूत की गयी हैं, जिनका वह अधिकारपूर्वक उपभोग करता है और कर सकता है । यहां यह तथ्य भी स्पष्ट है कि इन्सान के न तो अधिकार असीमित हैं और न ही उपभोग । उसके लिए भी एक सीमा-रेखा है, जिसे मर्यादा कहते हैं । यह चीज़ ही इन्सान को नैतिक अस्तित्व प्रदान करती है । मर्यादा और नैतिक अस्तित्व को बनाये रखने के लिए ही नहीं सदाचरण के द्वारा इन्हें परिमार्जित करने एवं जीवन को उच्चता की ओर ले जाने के लिए इन्सान को आध्यात्मिकता की आवश्यकता होती है, जो उसके जीवन की नैसर्गिक, बुनियादी और अपरिहार्य आवश्यकता है । यह उसका स्वाभाविक गुण है कि उसका पूज्य प्रभु हो, जिसकी वह बन्दगी-भक्ति करे, उसका आज्ञाकारी बने, उसके आदेशों-निर्देशों पर चलकर अपने इहलौकिक और पारलौकिक जीवन को सफल बनाये । इसके विपरीत जब इन्सान ईश्वर की अवज्ञा एवं स्वेच्छाचार करता है, अपने कर्म व इरादे के अधिकार का मनमाना इस्तेमाल करता है, तो सहज ही उसका जीवन-आचार भ्रष्ट हो जाता है और उसके जीवन में तरह-तरह के विकार पैदा हो जाते हैं, जो भ्रष्टाचार के ही रूप होते हैं । अत: सहज-स्वाभाविक रूप से यह बात निष्कर्षत: कही जा सकती है कि भ्रष्टाचार-निवारण के लिए अनिवार्य है कि इन्सान अपने स्रष्टा स्वाभाविक रूप से यह बात निष्कर्षत: कही जा सकती है कि भ्रष्टाचार-निवारण के लिए अनिवार्य है कि इन्सान अपने स्रष्टा-पालनहार की ओर पलटे, उसका आज्ञाकारी बने एवं उसका रंग धारण करे।

इस हक़ीक़त से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि भ्रष्टाचार किसी भी देश व समाज के लिए इन्तिहाई घातक होता है । दूसरे शब्दों में, यह इन्सान के नैतिक अस्तित्व पर ही सवालिया निशान लगा देता है । यह नैतिक अस्तित्व इन्सान को पशुता से बचाता है । आज हमारा देश भ्रष्टाचार और नैतिक पतन से गंभीर रूप से जूझ रहा है । मंत्री से लेकर संतरी तक सभी आचार-भ्रष्टता और कर्तव्यहीनता के शिकार हैं । बहुतेरे अवैध ढंग से धन को हड़पने एवं छीना-झपटी में 'बिज़ी' हैं । कभी कोई पकड़ में आ जाता है, अधिसंख्य सुख-चैन से हाथ साफ़ करते रहते हैं । इसी कारण भारत भ्रष्ट देशों की सूची में लगातार अपना पायदान मज़बूत कर रहा है ।

ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल के एक ताज़ा सर्वेक्षण के अनुसार भारत 2011 के भ्रष्ट सूचकांक में और भ्रष्ट होकर 95वें पायदान पर पहुंच गया है । इससे पहले यह 79वें पायदान पर था । एक आंकड़े के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष लगभग 5 बिलियन डॉलर रक़म रिश्वत के रूप में ली-दी जाती है । आचार-भ्रष्टता की कोख से जो कालाधन निकलता है उसे 'मलाईदार तबक़ा' स्विस बैंकों सहित अन्य विदेशी बैंकों में जमा करके देश और समाज की प्रगति को ठप करने में 'योगदान' करता है, फिर भी 'देश भक्त' और 'देशप्रेमी' कहलाता है । कभी-कभी तो इन 'उपाधियों' के आगे 'महान' भी लगवा लेता है । स्विस बैंकिंग एसोसिएशन के अनुसार, स्विस बैंकों में भारत के लोगों की जितनी रक़म जमा है, उतनी रक़म दुनिया के किसी भी देश के लोगों की नहीं जमा है । यह इतनी बड़ी रक़म है कि इसके द्वारा देश का काया-कल्प किया जा सकता है । यह भारत के वैदेशिक ऋण का 13 गुना है ।

हमारे देश के सभी प्रशासनिक अंगों-उपांगों के साथ ही पूरे सिस्टम में भ्रष्टाचार मौजूद है । व्यवस्थापिका से लेकर न्यायपालिका तक सभी इसके शिकार हैं । सेना के सभी अंग भी इससे अछूते नहीं हैं । भ्रष्टाचार विरोधी क़ानून मौजूद हैं । अब लोकपाल बनाने की बात चल रही है, फिर भी भ्रष्टाचार उन्मूलन के प्रति कोई आश्वस्त नहीं है । अन्ना हज़ारे जी भी कह चुके हैं कि लोकपाल से भी पूरे तौर पर भ्रष्टाचार नहीं समाप्त होगा । इस वास्तविकता के बावजूद भ्रष्टाचार रूपी वृक्ष की जड़ों की ओर ध्यान नहीं जा रहा । जब तक इन्सान के नैतिक अस्तित्व को सबल नहीं बनाया जाएगा और उसके अन्दर ईशपरायणता एवं ईशभय नहीं पैदा होगा, तब तक भ्रष्टाचार के दानव का संहार असंभव है ।

सुकर्मी ही अल्लाह को प्रिय

मौलाना जलालुद्दीन उमरी
(अध्यक्ष, जमाअत इस्लामी हिन्द)

सभी जानते हैं कि भ्रष्टाचार हमारे देश की कोई नयी समस्या नहीं है, लेकिन इसका गंभीर से गंभीरतम रूप धारण कर लेना अत्यंत चिंताजनक और अफ़सोसनाक है । अत: इस समस्या के निदान के प्रति सभी देशवासियों को संकल्पबद्ध होकर प्रयास करना चाहिए । इस पर क़ाबू पाने के लिए एक ओर जहां कठोर क़ानून बनाने, प्रभावी निगरानी तंत्र विकसित करने एवं भ्रष्टाचार-छिद्रों को पाटने की ज़रूरत है, वहीं दूसरी ओर जनसामान्य का इस दिशा में नैतिक प्रशिक्षण होना चाहिए कि न तो रिश्वत ली जाए और न दी जाए । जब स्वस्थ मानसिकता बनेगी, तभी भ्रष्टाचार पर प्रभावी रोक लग सकेगी और हमारा देश भ्रष्टाचार मुक्त बन सकेगा ।

हमारे देश में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो चेतना पैदा हुई है, वह स्वागतयोग्य है । इस चेतना को रचनात्मक रूप मिलना चाहिए, लेकिन जनभावनाओं के दोहन से अवश्य बचा जाना चाहिए । इसके साथ ही यह सावधानी भी बरती जाए कि भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ अभियान में सरकार के साथ टकराव की स्थिति न पैदा हो । देश में बिखराव के हालात न बनें और क़ानून की सर्वोच्चता बरक़रार रहे ।

हमारा यह भी मानना है कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों व शिक्षाओं के समावेश के बिना भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ न तो स्वस्थ एवं रचनात्मक जनचेतना विकसित हो सकती है और न ही प्रभावी एवं दीर्घकालिक मनोवृत्ति पैदा हो सकती है ।

केवल रिश्वत का आदान-प्रदान ही भ्रष्टाचार नहीं है, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आने वाली हर प्रकार की गिरावट और पतनशीलता इसमें समाहित है । इसके विरुद्ध कम से कम यह सशक्त मनोवृत्ति पैदा करने की ज़रूरत है कि इन्सान के सुकर्मों पर ईश्वर उसे पुरस्कृत करेगा, उनका अच्छा बदला देगा और यदि इन्सान भ्रष्टतापूर्ण आचार व दुष्कर्म करेगा तो ईश्वर उसे दंडित करेगा, उसकी पकड़ करेगा । उससे इन्सान की न तो कोई अच्छाई छिप सकती है और न ही कोई बुराई । यदि भ्रष्ट इन्सान दुनिया में क़ानून की पकड़ से बच भी गया, तो एक समय ऐसा आएगा जब वह ईश्वर की पकड़ से कदापि नहीं बच पाएगा ।



भ्रष्टाचार मुक्त समाज कैसे ?

■ मुहम्मद अली शाह शुऐब

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि विकास के मद में दिये गये एक रुपये में से 15 पैसे ही ग़रीबों तक पहुंच पाते हैं। विचार करने वाली बात यह है कि किसी साधारण व्यक्ति ने यह बात नहीं कही है, बल्कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री ने कही थी । विचार किया जाए तो स्थिति आज भी नहीं बदली है, बल्कि पहले से भी ख़राब है । अधिकारी से लेकर चपरासी तक भ्रष्टाचार में लिप्त है । इसलिए आज तो गारंटी के साथ यह भी नहीं कहा जा सकता कि वे 15 पैसे भी आम लोगों तक पहुंच रहे हैं । कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी का यह आरोप है कि उत्तर प्रदेश के ग़रीबों तक तो केन्द्र से चले एक रुपये के पांच पैसे भी नहीं पहुंच पाते हैं ।

सच है कि आज़ादी के बाद 66 सालों में हमने बड़ी तरक़्क़ी की है । यह भी बताया जाता है कि हमारी आर्थिक स्थिति भी मज़बूत हुई है । किन्तु भारत की आंतरिक और वास्तविक स्थिति कुछ और ही कहानी बयान कर रही है । देश के असंगठित क्षेत्र पर अध्ययन हेतु गठित अर्जुन सेन गुप्ता कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 84 करोड़ लोग 20 रुपये प्रतिदिन पर गुज़ारा करने पर मजबूर हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि देश की लगभग 77 प्रतिशत जनसंख्या आधे पेट सोती है । संयुक्त राष्ट्र की संस्था वर्ल्ड फूड प्रोग्राम की एक रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि दुनिया के 25 प्रतिशत भूखे लोग भारत में रहते हैं । बताया जाता है कि लगभग तीन-चौथाई महिलाएं और बच्चे समुचित आहार न मिलने के कारण रोग ग्रस्त हैं । इसका परिणाम यह निकल रहा है कि देश में पैदा होने वाला हर चौथा बच्चा कम वज़न होता है ।

देश की दुर्दशा विभिन्न क्षेत्रों में

स्वास्थ्य : हमारे देश में स्वास्थ्य का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है । कई घातक क़िस्म की बीमारियों (जैसे टी०बी०, एड्स, मधुमेह, कैंसर इत्यादि) के संबंध में भारत पूरी दुनिया में अग्रणी देशों में गिना जाता है । न तो खाने को पर्याप्त भोजन है और न पीने के लिए साफ़ पानी उपलब्ध है । यूनीसेफ़ की रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या को पीने के लिए साफ़ पानी उपलब्ध नहीं है ।

शिक्षा : हमारे देश में शिक्षा का स्तर 1951 ई० के 19 प्रतिशत के मुक़ाबले में 67 प्रतिशत तो हो गया है लेकिन दुनिया के अशिक्षित देशों में आज भी अग्रणी ही है । और क्यों न हो जबकि आज भी देश में 30 करोड़ लोग निरक्षर हैं । कई करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो पांच से आठ साल स्कूल में गुज़ारने के बाद बड़ी मुश्किल से कुछ पढ़ना-लिखना ही सीख पाते हैं । जबकि पांच करोड़ बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने स्कूल की शक्ल ही नहीं देखी है ।

यदि देश की इस दुर्दशा पर दृष्टि डाली जाए तो स्पष्टत: ज्ञात हो जाता है कि इसका कारण देश में व्याप्त भ्रष्टाचार है । ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत भ्रष्ट देशों में 79वें पायदान से चढ़कर 94वें पायदान पर विराजमान है । एक आंकड़े के अनुसार भारत में हर साल लगभग 5 बिलियन डॉलर रक़म रिश्वत के रूप में ली-दी जाती है । यह भ्रष्टाचार ही है जिसके कारण भारत तमाम तरक़्क़ियों के बावजूद आगे नहीं बढ़ पा रहा है । भारत में इतना अनाज पैदा होता है कि देश की पूरी जनता के लिए पर्याप्त हो सकता है (किन्तु रख-रखाव का उचित प्रबंध न होने और भ्रष्टाचार के कारण हर साल करोड़ों टन अनाज गोदामों में सड़ जाता है । मगर ग़रीबों और भूखों तक नहीं पहुंच पाता । सर्वोच्च न्यायालय की चेतावनी को भी कोई असर नहीं होता कि अनाज को सड़ाने से अच्छा है कि ग़रीबों को सस्ते दामों पर दे दिया जाए । मानो हमारे देश के कर्ता-धर्ता नैतिक गिरावट की अन्तिम सीमा को भी लांघ चुके हैं और अनैतिकता के गर्त में पहुंच चुके हैं ।

देश में भ्रष्टाचार आम है

भ्रष्टाचार का अर्थ है 'निजी हित के लिए अपने अधिकारों (पद आदि) का अनुचित और ग़लत प्रयोग ।' अर्थात जब कोई व्यक्ति अपने निजी हित हेतु अपने पद

अथवा अधिकार का ग़लत प्रयोग करता है तो उससे दूसरे बहुत-से लोगों के अधिकारों का हनन होता है जिससे लोगों में अविश्वास को बढ़ावा मिलता है । फिर वे भी अपने जायज़ अधिकारों को पाने हेतु ग़लत और ग़ैर-क़ानूनी काम करने पर मजबूर हो जाते हैं । इस प्रकार पूरे समाज में एक अफ़रा-तफ़री मच जाती है । हम भली-भांति जानते हैं कि यह भ्रष्टाचार किसी भी समाज के लिए कैंसर के सदृश है । जब यह समाज में फैल जाता है तो पूरे समाज को तबाह करके रख देता है और लाख प्रयासों के बाद भी इसका कोई हल नज़र नहीं आता है ।

हम देख रहे हैं कि हमारा समाज आज तबाही के दहाने पर खड़ा है । इस भ्रष्टाचार को समाप्त करने की मांग भी चारों ओर से हो रही है और प्रयास भी ख़ूब किये जा रहे हैं । मगर 'मर्ज़ बढ़ता गया जूं-जूं दवा की' वाली मिसाल चरितार्थ होती नज़र आती है । आज हम देख रहे हैं कि भ्रष्टाचार को समाप्त करने वाली जितनी संस्थाएं हो सकती हैं वे स्वयं भ्रष्ट हैं ।

भ्रष्टाचार का अर्थ है 'निजी हित के लिए अपने अधिकारों (पद आदि) का अनुचित और ग़लत प्रयोग ।' अर्थात जब कोई व्यक्ति अपने निजी हित हेतु अपने पद अथवा अधिकार का ग़लत प्रयोग करता है तो उससे दूसरे बहुत-से लोगों के अधिकारों का हनन होता है जिससे लोगों में अविश्वास को बढ़ावा मिलता है । फिर वे भी अपने जायज़ अधिकारों को पाने हेतु ग़लत और ग़ैर-क़ानूनी काम करने पर मजबूर हो जाते हैं ।

राजनीतिक पार्टियों में भ्रष्टाचार

सबसे पहले आशा की जाती है कि राजनीतिक पार्टियां समाज को भ्रष्टाचार की तबाही से बचाने का प्रयास करेंगी। किन्तु जितनी अधिक इनकी ज़िम्मेदारी है उतनी ही अधिक ये पार्टियां भ्रष्ट नज़र आती हैं । कोई व्यक्ति मामूली-सा नगर पालिका सदस्य या विधायक बन जाता है, तो अपनी आगे की नस्ल का भी प्रबंध कर लेता है । देश में जितने बड़े-बड़े घोटाले हुए हैं, उनमें राजनीतिक हस्तियां लिप्त पायी गयी हैं । चारा घोटाला (नौ सौ चालीस करोड़ रुपये), हवाला घोटाला (18 मिलियन अमेरिकी डॉलर), बोफ़ोर्स घोटाला (64 करोड़ रुपये, कॉमन वेल्थ गेम घोटाला (70 हज़ार करोड़ रुपये), 2 जी स्पेक्ट्र घोटाला (136 लाख करोड़ रुपये), कोयला घोटाला (एक लाख 86 हज़ार करोड़ रुपये) वे बड़े-बड़े घोटाले हैं जो ख़ूब चर्चा में रहे हैं और देश का बच्चा-बच्चा इनको जानता है । वे घोटाले जो सामने नहीं आ पाते उनकी संख्या का आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि वे इनसे कितने अधिक होंगे । इन घोटालों ने देश की कमर तोड़ कर रख दी है ।

कोयला घोटाले को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने भी बहुत शोर मचाया, यहां तक कि संसद को भी नहीं चलने दिया था । इनके इस व्यवहार से प्रतीत होता था कि ये लोग देश के बड़े हितैषी हैं । किन्तु कौन नहीं जानता कि भाजपा के सत्ताकाल में कारगिल ताबूत घोटाला हुआ और कर्नाटक के मुख्यमंत्री येदयूरप्पा स्वयं भूमि घोटाले में लिप्त पाये गये । हवाला घोटाले में लालकृष्ण आडवाणी और मदनलाल खुराना आरोपी रहे हैं ।

प्रशासनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार

देश की प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों से भी आशा की जाती है कि वे समाज से भ्रष्टाचार को दूर करने में अपना योगदान करेंगे, किन्तु रिपोर्टों से मालूम होता है कि यहां भी भ्रष्टों की कमी नहीं है, बल्कि राजनीतिक हस्तियां जो घोटाले करती हैं उनमें इनकी भी कहीं न कहीं भागीदारी होती है । इसके अतिरिक्त यहां भी घोटालों की एक लंबी सूची मौजूद है । खाद्यान्न घोटाला (2 लाख करोड़ रुपये), फ़्यूचर ट्रेडिंग धांधली (314 करोड़ रुपये), सी॰आर॰पी॰एफ़॰ भर्ती घोटाला (225 करोड़ रुपये), के आई॰ए॰डी॰बी॰ प्रोजेक्ट घोटाला (107 करोड़ रुपये) वे बड़े-बड़े घोटाले हैं जो सामान्य रूप से ली जाने वाली घूस के अतिरिक्त हैं ।

पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार

अब रह जाता है पुलिस विभाग, जिससे समाज की सुरक्षा एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन की सशक्त आशा की जाती है,

किन्तु इस विभाग के भ्रष्ट होने पर तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है। इसका हाल तो हम चौराहे पर खड़े होकर देख सकते हैं। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश के 25 लाख बी॰पी॰एल॰ धारक ग़रीबों को भी अपना जायज़ काम कराने के लिए पुलिस को घूस देनी पड़ती है । कहने का तात्पर्य यह है कि पुलिस विभाग भी उतनी ही भ्रष्ट है जितनी की उपर्युक्त संस्थाएं । इस भ्रष्टाचार में केवल एक पुलिस वाला ही लिप्त नहीं है, बल्कि जितना बड़ा पद उतनी बड़ी गांठ । तेलगी फ़र्ज़ी स्टाम्प घोटाले (43 हज़ार करोड़) में मुम्बई के पूर्व पुलिस आयुक्त और कई अन्य पुलिस अधिकारी लिप्त पाये गये ।

कहने का तात्पर्य यह है कि देश में क़ानून और व्यवस्था लागू करने की ज़िम्मेदारी जिन संस्थाओं और विभागों पर है वे भी भ्रष्टाचार के दलदल में धंसे हुए हैं । ऐसा लगता है कि पैसा ही इनके लिए सब कुछ है । प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी, जो कि लोकतंत्र का चौथा शक्तिशाली स्तम्भ मानी जाती है, इस भ्रष्टाचार से अछूती नहीं रह गयी है ।

जनता में भ्रष्टाचार

मामला केवल इतना ही नहीं है कि देश का सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार में लिप्त है, बल्कि वास्तविकता यह भी है कि इस भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाली जनता भी कुछ कम नहीं है । ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की 2005 की रिपोर्ट के अनुसार देश की 62 प्रतिशत जनता घूस देने का तजुर्बा रखती है । अर्थात जनता भी ग़ैर-क़ानूनी कामों में इस प्रकार लिप्त है कि उनके अन्दर यह हौसला ही नहीं रह गया है कि वह भ्रष्टाचार और भ्रष्ट लोगों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठा सकें । बच्चे का स्कूल में दाख़िला कराना हो, नौकरी हासिल करनी हो या कोई और काम निकलवाना हो, किसी काम में भी कोई रिश्वत देने से नहीं चूकती, बल्कि इस पर खुश होती है कि उसका काम हो गया । जनता को भी मालूम है कि यदि भ्रष्टाचार समाप्त हो गया तो न तो बिजली की चोरी हो पाएगी और न अन्य काम पीछे के दरवाज़े से हो पाएंगे ।

ऐसा भी नहीं है कि इस भ्रष्टाचार को रोकने के प्रयास नहीं किये जा रहे हैं, बल्कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए क़ानून भी बनाए जा रहे हैं, बहुत-से ग़ैर-सरकारी संगठन भी काम कर रहे हैं । बहुत-से आन्दोलन भी चलाए जा रहे हैं । बल्कि एक आन्दोलन जो अन्ना हज़ारे ने चलाया था उसी से एक और पार्टी राजनीतिक क्षितिज पर प्रकट हुई है । उस पार्टी का नाम है–'आम आदमी पार्टी' । इसका नारा है कि समाज को भ्रष्टाचार मुक्त करेंगे ।

निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार ने अपने पंजों को जिस मज़बूती के साथ गाड़ रखा है उनको उखाड़ना कोई आसान काम नहीं है । यह काम केवल सत्ता को चलाने वाले हाथों को बदल देने मात्र से होने वाला नहीं है, बल्कि कई स्तरों पर आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है ।

भ्रष्टाचार कैसे समाप्त हो ?

जब हम भ्रष्टाचार को समाप्त करने पर विचार करते हैं तो सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने यह आता है कि इस भ्रष्टाचार का मूल कारण क्या है ? यदि कारण का पता लग जाए तो उन्मूलन में आसानी होगी । इस प्रश्न के उत्तर में इस्लाम एक बहुत-ही सटीक बात कहता है । उसकी मान्यता है कि भ्रष्टाचार, अत्याचार और अनाचार का एक ही मूल कारण है । वह है मनुष्य का अपने आपको स्वच्छंद समझना, अर्थात अपने-आपको किसी सत्ता के समक्ष उत्तरदायी न समझना । जब मनुष्य अपने-आपको स्वच्छंद समझता है तो वह अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए हर संभव प्रयास करता है, चाहे उसके लिए उसे किसी पर अत्याचार ही क्यों न करना पड़े । इसी से मनुष्य के अन्दर 'खाओ, पियो और मौज करो' की धारणा भी परवान चढ़ती है ।

जब मनुष्य अपने जीवन का लक्ष्य केवल 'खाना, पीना और मौज करना' ही बना लेता है तो वह इस जीवन में किसी नैतिक नियम का पालन करने हेतु तैयार नहीं होता । वह हर उस काम को कर गुज़रता है जिसमें उसे लाभ हो । अतएव इस्लाम इस बात का तो पक्षधर है ही कि भ्रष्टाचार-उन्मूलन के लिए सख़्त से सख़्त क़ानून बनने चाहिएं, लेकिन इसके अतिरिक्त मुख्य रूप निम्नलिखित दो उपाय और भी बताता है, जो कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन में मुख्य भूमिका निभाते हैं–

समाज में न्याय की स्थापना

इस्लाम की मान्यता है कि भ्रष्टाचार के मूल कारणों में से एक समाज में व्याप्त भेदभाव, अन्याय और संसाधनों तथा सुविधाओं का कुछ ही हाथों में चले जाना है । जब मनुष्य अपने प्रति भेदभाव और समाज में व्याप्त अन्याय को देखता है तो अपने अधिकार को पाने के लिए वह ग़लत क़दम उठाने पर मजबूर होता है । फिर जब उस ग़लत क़दम उठाने से उसका काम बन जाता है तो वह वहीं नहीं ठहर जाता, बल्कि और अधिक की चाहत में दूसरों के हक़ और अधिकारों पर डाका डालना आरंभ कर देता है, यहां तक कि वह यह भी भूल जाता है कि जिस तरह वह सुख-सुविधाओं और संसाधनों से वंचित था उसी तरह कुछ और लोग भी वंचित होंगे । निश्चित रूप से यदि समाज में न्याय को स्थापित कर दिया जाए, सारे मनुष्यों को संसाधनों को प्रयोग में लाने और रोज़गार आदि के समान अवसर प्रदान कर दिये जाएं तो भ्रष्टाचार के ख़ात्मे की एक शक्ल बन सकती है । क़ुरआन में आदेश दिया गया है कि–

"अल्लाह न्याय, भलाई और नातेदारों के हक़ अदा करने का आदेश देता है और बुराई और अश्लीलता एवं ज़ुल्म व ज़्यादती से रोकता है । वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम शिक्षा लो ।" (16:90)

एक और स्थान पर क़ुरआन कहता है–

"हमने अपने रसूलों को साफ़-साफ़ निशानियों और मार्गदर्शनों के साथ भेजा, और उनके साथ किताब और तुला अवतरित की ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम हों ।" (57:25)

क़ुरआन में अन्यत्र है–

"मुसलमानो, अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को अमानत वालों को सौंप दो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ करो ।" (4:58)

ईश्वर के समक्ष पेश होने की अवधारणा

आवश्यकता इस बात की है कि सत्ता में ऐसे लोगों को लाया जाए जो भ्रष्टाचार मुक्त हों । लेकिन फिर एक और सवाल पैदा होता है कि ऐसे लोग आएं कहां से और ऐसे लोगों की पहचान क्या होगी ?

इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ऐसे व्यक्ति वही लोग हो सकते हैं जो अपने हृदय में ईश्वर का भय रखते हों । और ऐसे लोगों को वही लोग आगे भी ला सकते हैं जो स्वयं ईश्वर का भय रखते हों । और यह समझते हों कि हमें मरने के पश्चात अपने ईश्वर को हर कर्म का जवाब देना है । यदि मनुष्य यह समझेगा कि मुझे किसी के सामने जवाब नहीं देना है तो उसको निरंकुश होने से कोई नहीं रोक सकता ।

यदि आपके यहां कोई नौकर हो और उसे यह विश्वास हो जाए कि उसे आपके समक्ष कोई जवाब नहीं देना है तो वह कभी काम नहीं कर सकता । इसलिए चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में यह बात बैठायी जाए कि हरेक को मृत्यु के पश्चात ईश्वर के समक्ष अपने पूरे जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना है ।

क़ुरआन में है–"फिर जिस किसी ने कण भर नेकी की होगी वह उसको देख लेगा । और जिसने कण भर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा ।" (99:7,8)

यदि कोई व्यक्ति इस धारणा को मन-मस्तिष्क में बैठाकर जीवन व्यतीत करता है तो वह कभी पाप के निकट नहीं फटक सकता । यदि समाज के सभी लोग इस धारणा को अपना लें तो समाज से भ्रष्टाचार का उन्मूलन बहुत आसान हो जाएगा । किन्तु पक्षपातवश इस बात को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है । शायद इसलिए नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है कि यह इस्लाम की प्रस्तुत की हुई धारणा है । जबकि वास्तविकता यह है कि केवल यही वह धारणा है जो क़ुरआन के अतिरिक्त पूर्णतः और अंशतः वेदों, उपनिषदों, बाइबल और दूसरी अन्य धार्मिक ग्रंथों में पायी जाती है ।

क़ुरआन केवल अरबों और केवल मुसलमानों की पुस्तक नहीं है कि इसकी प्रस्तुत की हुई धारणा को केवल मुसलमानों तक सीमित करके नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए । यह क़ुरआन तो समस्त मानव जाति के स्रष्टा ईश्वर की ओर से पूरी मानवजाति के लिए है । फिर यह कितने संकुचित दृष्टिकोण की बात है कि यदि कोई कैंसर से पीड़ित हो और उसे अमृत लाकर दिया जाए तो केवल इस आधार पर उसे ठुकरा दिया जाए कि यह फ़लां जाति या फ़लां क्षेत्र के व्यक्ति ने लाकर दिया है । जब हमारा समाज भ्रष्टाचार जैसे कैंसर से पीड़ित है और इसका कोई इलाज कहीं सुझाई नहीं दे रहा है । इस्लाम इसका सुझाव प्रस्तुत कर रहा है और न

केवल प्रस्तुत कर रहा है बल्कि प्रमाण के साथ प्रस्तुत कर रहा है तो क्यों न इसको स्वीकार कर लिया जाए । इस्लाम प्रमाणस्वरूप मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी और उनके साथियों के जीवन चरित्र को प्रस्तुत करता है कि इस धारणा को स्वीकार करने के पश्चात जो लोग भक्षक थे रक्षक बन गये, जो अत्याचारी थे सदाचारी बन गये, जो अन्यायी थे न्यायशील बन गये, जो लोग लूटने वाले थे वे दानी बन गये । जब उनको सत्ता सौंपी गयी तो वे जनता के सबसे बड़े सेवक बन गये । जब उनको जज बनाया गया तो उन्होंने न्याय किया चाहे मामला उनके अपने बेटे और सगे संबंधी का ही क्यों न रहा हो ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बाद दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि०) के शासनकाल की बहुत प्रसिद्ध घटना है कि एक दिन ख़लीफ़ा उमर (रज़ि०) यह देखने के लिए कि मेरी प्रजा में कोई परेशान तो नहीं है रात के समय गश्त लगा रहे थे । जब सुबह का समय निकट आया तो ख़लीफ़ा आराम करने के लिए एक घर की दीवार से टेक लगाकर बैठ गये । अचानक घर के अन्दर से एक बूढ़ी औरत की आवाज़ आती है जो अपनी बेटी से कह रही थी कि बेटी उठ और दूध में पानी मिला दे । बेटी ने उत्तर दिया कि 'अम्मां क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि ख़लीफ़ा का आदेश है कि दूध में पानी न मिलाया जाए ।' इस पर बूढ़ी औरत ने कहा कि बेटी यहां ख़लीफ़ा देख थोड़े ही रहे हैं । अभी तो अंधेरा है जल्दी से उठ और पानी मिला दे । लड़की ने जवाब दिया कि अगर ख़लीफ़ा नहीं देख रहे हैं तो हमारा ख़ुदा तो हमें देख रहा है । मैं हरगिज़ दूध में पानी नहीं मिलाऊंगी । बूढ़ी औरत और बेटी की यह वार्ता सुनकर ख़लीफ़ा उमर (रज़ि०) इतने प्रसन्न हुए कि उस लड़की से अपने बेटे का ब्याह कर दिया ।

इस घटना में विचार करने वाली कई बातें हैं । एक तो यह कि शासक के हृदय में भी ईश्वर का भय है कि मेरी प्रजा में कहीं कोई भूखा और परेशान न रह जाए । यदि ऐसा हुआ तो मरने के बाद मैं अपने ईश्वर को क्या मुंह दिखाऊंगा । और यही ईश्वर का भय उस बेटी के हृदय में भी है कि यदि ख़लीफ़ा नहीं देख रहे हैं तो क्या हुआ हमारा ईश्वर तो हमें देख रहा है और मरने के बाद हम से हमारे हर मामले का हिसाब लेगा ।

ख़लीफ़ा उमर (रज़ि०) के ही शासनकाल की एक और घटना है कि ख़लीफ़ा रेगिस्तान में कहीं जा रहे थे । रास्ते में उन्हें एक चरवाहा मिला जो भेड़ें चरा रहा था । ख़लीफ़ा ने उससे कहा कि अपने रेवड़ में से एक भेड़ मुझे बेच दो ताकि मैं इसका दूध पी सकूं । चरवाहे ने कहा कि ये भेड़ें मेरी नहीं हैं । मैं तो गुलाम हूं इन भेड़ों को केवल चराने की ज़िम्मेदारी मेरी है । ख़लीफ़ा ने उसकी परीक्षा लेने के लिए कहा कि तुम्हारा मालिक तुम्हें यहां देख थोड़े ही रहा है । तुम एक भेड़ मुझे बेच दो और अपने मालिक से कह देना कि एक भेड़ को जंगल में भेड़िया खा गया । उस गुलाम ने जवाब दिया कि मैं अपने मालिक को तो जवाब दे सकता हूं लेकिन उस ख़ुदा को क्या जवाब दूंगा जो मुझे हर समय देख रहा है । ख़लीफ़ा उस गुलाम के इस उत्तर से इतने प्रसन्न हुए कि उसके मालिक के पास गये और भेड़ के स्थान पर उस गुलाम को ख़रीदा और उसे आज़ाद कर दिया और उससे कहा कि तुम्हारी इस नेकी से तुम्हें परलोक में तो फल मिलना ही मिलना है दुनिया में भी इसका फल तुम्हें यह मिला कि तुम स्वतंत्र हो गये ।

इससे यह बात ज्ञात होती है कि यदि कोई ईश्वर का भय हृदय में रखकर जीवन व्यतीत करता है तो इसका बदला केवल परलोक में ही नहीं मिलता बल्कि दुनिया में भी उसका फल किसी न किसी रूप में मिल कर रहता है । विचार कीजिए कि यदि राजा और प्रजा दोनों के हृदय में ईश्वर का इस प्रकार भय हो तो क्या भ्रष्टाचार का नामोनिशान रह जाएगा ? आज आवश्यकता है कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु जहां बहुत-से उपाय तलाश किये जा रहे हैं वहां इस विकल्प को भी बिना किसी पक्षपात के क्रियान्वित करके देखा जाए ।

सूचना

मेरठ में 'कान्ति' हासिल करने के लिए संपर्क करें–

AHSAN MUSTAQIMI

1946/1, Gali No. 28, Near Bismillah Masjid,
D-Block, Zakir Husain Colony,
Meerut City-2 (Uttar Pradesh)
Mob. : 09411022708
E-mail : mustaqimiahsan1931@gmail.com

मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=
बुलूगुल मराम	275/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउर्रहमान मो०	275/=
हुकूकुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=
हुकूकुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=
हुकूकुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	28/=
सैय्यदना उमर फारूक रज़ि:	28/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	28/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	28/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=
इस्लाम और हिन्दूधर्म में समानताएं	50/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है	60/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना	28/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार	60/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा	50/=
मांसाहार उचित या अनुचित	60/=
जन्नत का बयान इकबाल कीलानी	120/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=
तौहीद के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=

सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
तौहीद के आंसू इकबाल कीलानी	65/=
हमारी दावत किताब व सुन्नत	40/=
चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब	20/=
मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	30/=
और मैं मर गया	32/=
मसला उर्स और ग्यारहवीं	30/=
इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
किताबुत्तौहीद	75/=
कुरआन की शीतल छाया	85/=
अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
जादू का इलाज	85/=
कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लामी अक़ीदा	22/=
इस्लाम क्या है	50/=
मासूरह दुआएं	30/=
हिसनुल मुसलिम (उच्चारण सहित)	50/=
नमाज़े मोहम्मदी (उच्चारण सहित)	35/=
परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

कालचक्र

■ डॉ॰ सलीम ख़ान

शमशेर और विरेन्द्र एक दूसरे के पड़ोसी ज़रूर थे परंतु दोस्त नहीं थे । उन दोनों का मेलजोल एक औपचारिक मजबूरी थी । खेतों की बाड़ें ऊंची हो गयी । सेवकों का बंटवारा हो गया । एक के समर्थक का दूसरे के साथ जाना ग़द्दारी समझा जाने लगा । धीरे-धीरे यह दुश्मनी हमलों में बदल गयी । यह दोनों अपने-अपने गिरोहों की सहायता से एक-दूसरे को तरह-तरह का नुक़सान पहुंचाने लगे । दोनों एक-दूसरे के समर्थकों की हत्या करके अपना-अपना वर्चस्व सिद्ध करने में लगे रहते ।

कालचक्र अपनी मंद गति से घूम रहा था कि एक दिन अचानक उनके क्षेत्र में बहुत सारी गाड़ियां आ धमकीं । उस पिछड़े गांव में इससे पहले कभी इस तरह की घटना नहीं घटी थी । आने वालों ने वीरेन्द्र और शमशेर को चौंका दिया । इन लोगों ने अपने आदमियों से आने वालों के उद्देश्य का पता लगाया तो उन्हें पता चला कि आगंतुक सरकारी अधिकारी हैं । उन लोगों का अनुमान है कि इस क्षेत्र में खनिज पदार्थों की खानें हैं और वह इस तथ्य की जांच-पड़ताल करना चाहते हैं । उनको यह भी पता चला कि आने वालों के पास अपनी सुरक्षा का विशेष प्रबंध भी है । उन लोगों को डरा धमकाकर भगा देना आसान नहीं है ।

इस नयी परिस्थिति ने वीरेन्द्र और शमशेर दोनों को चिंताग्रस्त कर दिया । बाहर का ख़तरा अन्दर की दुश्मनी से बड़ा लग रहा था । दोनों दोस्तों ने मिलकर यह फ़ैसला किया कि वे आने वाले बड़े अधिकारी से बात करेंगे । आने वाले अधिकारी भी उनसे मिलने के इच्छुक थे । मुलाक़ात का वक़्त तय हो गया । औपचारिक परिचय के बाद बातचीत शुरू ।

आने वालों ने उन दोनों को बधाई दी कि उनके क्षेत्र की धरती पदार्थों से भरी पड़ी है और सरकार उनका उपयोग करने के लिए यहां कारख़ाना लगाएगी ।

वीरेन्द्र ने पूछा, "क्योंकि ये ख़ज़ाने हमारे खेतों के नीचे दबे हुए हैं, इसलिए इसके मालिक तो हम ही हुए ।"

जवाब मिला, "नहीं, जो कुछ ज़मीन के नीचे है, वह सरकार की सम्पत्ति है ।"

शमशेर को बहुत आश्चर्य हुआ । उसने पूछा, "क्यों ? अगर खेत हमारे हैं तो इन खेतों के नीचे के खनिज पदार्थ भी हमारे होने चाहिएं ।"

सरकारी अधिकारी ने बताया, "नहीं...ऊपर की फ़सल तुमने उपजाई है इसलिए तुम्हारी है । लेकिन नीचे खजिन तुमने नहीं रखे, इसलिए तुम्हारे नहीं हैं ।"

यह तर्क शमशेर की समझ में नहीं आया । उसने कहा, "अगर हमने नहीं रखे तो सरकार ने भी तो नहीं रखे । इसलिए अगर हमारी नहीं तो सरकार की कैसे हो गयी ?"

सरकारी अधिकारी ने बताया, "वास्तविकता तो यह है कि यह ज़मीन भी सरकार की है ।"

दोनों मित्रों के लिए यह बिल्कुल नया ख़ुलासा था, उन्होंने कहा, "यह क्या बात कर रहे हैं आप ? सदियों से यह ज़मीन हमारे बाप-दादा की सम्पत्ति रही है और हमें विरासत में मिली है ।"

यह बात ज़रा कठोर लहजे में कही गयी थी, इसलिए इसका उत्तर भी कठोरता पूर्ण मिला, "तुम्हारे बाप-दादा ने यह ज़मीन ख़रीदी थी क्या ? और अगर ख़रीदी भी थी तो जिसने यह ज़मीन बेची थी, उसने नहीं ख़रीदी थी । इसलिए यह ज़मीन न तुम्हारे बाप-दादा की थी और न तुम्हारी है ।"

शमशेर जवाब सुनकर ठंडा हो गया । उसने विनम्रता से कहा, "परन्तु हमें अब तक यह बात बतलायी क्यों नहीं गयी ?"

"इसलिए नहीं बतलायी गयी कि इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी । अब ज़रूरी हो गया तो बता दिया गया ।"

वीरेन्द्र और शमशेर को अचानक महसूस हुआ जैसे बरसों से उनके लूट के माल को दिन-दहाड़े किसी ने लूट लिया और वह कुछ भी न कर सके । वीरेन्द्र बोला, "परंतु श्रीमान हमारा और हमारे नौकरों का गुज़र-बसर इस धरती पर होने वाली खेती-बाड़ी से होता है । हमारे जानवर इन्हीं खेतों और जंगलों में पलते हैं । अगर यह सब हम से छीन

लिया गया तो...तो हम बरबाद हो जाएंगे ।''

''नहीं, हम ऐसा नहीं होने देंगे ?'' सरकारी अधिकारी ने कहा, ''हम इन ज़मीनों के बदले तुम्हारे नुक़सान की भरपाई करेंगे जिससे तुम लोग नये खेत ख़रीद सको ।''

वीरेन्द्र बोला, ''परन्तु साहब...मूल्य कौन तय करेगा ?''

सरकारी अधिकारी ने कहा, ''यह तो स्वाभाविक है, हम ही तय करेंगे ।''

शमशेर बोला, ''लेकिन अगर उस नयी ज़मीन के नीचे भी खनिज पदार्थ निकल आये तो ?''

अधिकारी हंसकर बोला, ''मित्र तुम्हारे दुर्भाग्य को हम तो नहीं बदल सकते ?''

''अभी तो आप कह रहे थे कि खनिज का निकलना हमारा सौभाग्य है और अभी आप लोग कह रहे हैं कि यह हमारा दुर्भाग्य है । यह गोरख धंधा हमारी समझ से बाहर है ?''

''भाई आप बहुत भोले हो । बातें कहने की और होती हैं और उनकी असलियत कुछ और होती है, वैसे अगर हम दोनों में से एक बदक़िस्मत हैं तो दूसरा ख़ुशक़िस्मत भी तो है । सरकार अगर सौभाग्यशाली है तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह जनता की सरकार है । अब तुम ही बताओ...जनता की सरकार का सौभाग्य जनता का सौभाग्य है कि नहीं ?''

इस तरह की लच्छेदार बातें वीरेन्द्र और शमशेर ने पहली बार सुनी थीं । इसलिए उनकी समझ में कुछ नहीं आया । वैसे भी ज़मीनों के हाथ से निकल जाने की बात सुनकर उनका दिमाग़ ख़राब हो गया था । वीरेन्द्र ने डरते-डरते पूछा, ''उन कारख़ानों का मालिक कौन होगा ?''

जवाब मिला, ''वह उद्योगपति जो उसमें पूंजी निवेश करेगा ।''

''और उन खनिज पदार्थों का मालिक कौन होगा ?''

''सरकार होगी, लेकिन वह उन उद्योगपतियों को खनिज पदार्थ बेच देगी ।''

''और ज़मीन का क्या होगा ? वह किसकी होगी ? सरकार की या पूंजीपति की ?''

''वैसे तो सरकार की होगी परंतु वह उसे किराये पर दे देगी ।''

''क्या मतलब ? हमारी ज़मीन हम से छीनकर किसी और को दे दी जाएगी ?''

''जी हां...क्योंकि वह इसका किराया अदा करेंगे ।''

''परंतु हमारी ज़मीन का किराया कोई और क्यों लेगा ?''

सरकारी अधिकारियों को गुस्सा आ गया । उनमें से एक ने कहा, ''श्रीमान वीरेन्द्र सिंह, यह बात आपको पहले ही बतायी जा चुकी है कि यह ज़मीन आप लोगों की नहीं, सरकार की थी और इसके बावजूद आप लोगों को इसका भुगतान किया जा रहा है । इस कृपा के लिए आपको सरकार का आभारी होना चाहिए और दूसरी बात यह कि इन कारख़ानों से इस क्षेत्र में जो विकास होगा, जो समृद्धि आएगी, उसका फ़ायदा तो आपको भी होगा ।''

''हमें होगा, वह कैसे ? हमारे खेत-खलिहान हम से छिन जाएंगे और हमारे आदमी भी बेरोज़गार हो जाएंगे, इसमें तो हमारा नुक़सान ही नुक़सान है ।''

''नहीं, ऐसा नहीं होगा ।'' एक अधिकारी बोला, ''तुम्हारे आदमियों को कारख़ाने में काम मिल जाएगा ।''

''और हमें ?'' दोनों ने एक साथ पूछा ।

''और तुम्हें ठेका मिल जाएगा ।''

''क्या मतलब ? किस चीज़ का ठेका ?'' शमशेर ने पूछा ।

''तुम लोग ज़मींदार से ठेकेदार हो जाओगे । यह लोग तुम्हारी ज़मीन में हल जोतने के बजाय तुम्हारे अधीन कारख़ाने में काम करेंगे । पहले यह फ़सल उगाते थे, जिसे बेचकर तुम उनकी मज़दूरी देते थे और अपना मुनाफ़ा रख लेते थे । उसी प्रकार अब यह कारख़ाने में तुम्हारे ठेके पर काम करेंगे । तुम ठेके के पैसे वसूल करके उनकी मज़दूरी चुकाओगे ।

कारख़ाने की रूपरेखा बहुत जल्द तैयार हो जाएगी और

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

-संपादक

उसका निर्माण कार्य जब शुरू होगा तो उसमें लेबर...हमारा मतलब है मज़दूर सप्लाई के काम का ठेका तुम्हें दे दिया जाएगा । तुम्हारे आदमी फिर मेहनत-मज़दूरी करने लगेंगे और तुम इनकी मेहनत की क़ीमत वसूल करके इससे फ़ायदा उठाने लगोगे । न व्यवस्था बदलेगी और न तुम्हारी भूमिका...उनकी परिस्थिति में भी कोई परिवर्तन नहीं आएगा ।''

वीरेन्द्र ने ख़ुश होकर पूछा, ''कारख़ाने के निर्माण के दौरान तो यह चलेगा, लेकिन उसके बाद तो हम सब बेकार हो जाएंगे ?''

''नहीं, ऐसा नहीं होगा । कोई भी उद्योग मज़दूरों के बिना नहीं चल सकता, इसके बाद भी मानव संसाधन उपलब्ध कराने का ठेका तुम्हें मिल जाएगा । माल लाने और ले जाने के ठेके, वह भी हम तुम्हीं को देंगे क्योंकि तुम अपने आदमी जो हो । इससे तुम्हारा और हमारा, दोनों का काम चलता रहेगा ।''

दोनों दोस्तों के चेहरे खिल उठे । उन्होंने कहा, ''साहब...आपने तो पहले डरा ही दिया था, शुरू में यह क्यों नहीं बताया ?''

सरकारी अधिकारी मुस्कुराये । उन्होंने कहा, ''अगर आप लोगों को पहले ही यह बात बता दी जाती तो आप लोग ख़ुश नहीं होते, इसलिए पहले लोगों को डराया जाता है, दबाव बनाने के बाद फिर धीरे-धीरे उसे हटाया जाता है जिससे सामने वाला अंततः ख़ुश हो जाता है ।''

''जैसा कि हम ख़ुश हुए हैं ।'' सब हंसने लगे ।

बक्सर क्षेत्र में वैसे तो औद्योगिक क्रान्ति आ गयी थी लेकिन फ़र्क़ केवल इतना हुआ कि कल का ज़मींदार आज का ठेकेदार हो गया । कल तक खेत में हल चलाने वाला मज़दूर आज मशीन चला रहा था । देखने में बहुत कुछ बदल गया था लेकिन मूल रूप से कुछ भी नहीं बदला था । फिर ऐसा वक़्त भी आ गया कि दोनों दोस्तों के अन्दर ठेके लेने की प्रतिस्पर्धा शुरू हो गयी । थोड़े समय के लिए दोनों में जो दोस्ती क़ायम हुई थी, उसमें फिर दरार पड़ गयी ।

कारख़ाने को बनने में पांच साल लग गये । इस बीच गांव में पक्की सड़कें बन गयीं, पुल बन गये, बिजली आ गयी, बाज़ार बन गये और न जाने क्या-क्या हो गया । दूरदराज़ के इलाक़ों से सैकड़ों लोग यहां आकर बस गये । एक गुमनाम गांव अच्छाख़ासा शहर बन गया था । कारख़ाने का उद्घाटन करने के लिए उद्योग मंत्री आये । उन्होंने घोषणा की, ''इस इलाक़े में जो औद्योगिक विकास होगा, उससे यहां के लोगों को तो फ़ायदा होगा ही, बाहर से आने वाले लोगों को भी लाभ होगा । उनकी प्रगति और भलाई के लिए स्थानीय संस्थाएं स्थापित की जाएंगी जिनमें जनमत के आधार पर लोक प्रतिनिधि चुने जाएंगे और उनकी सहायता से जनकल्याण एवं निर्माण के काम होंगे ।''

मंत्री जी के इन शब्दों ने वीरेन्द्र और शमशेर के कान खड़े कर दिये । उन्हें महसूस हुआ कि उनकी पुश्तैनी चौधराहट को उनसे छीन लेने का षड्यंत्र रचा जा रहा है और गांव की जनता, जो उनकी जन्मजात ग़ुलाम हुआ करती थी, उन्हें स्वतंत्र किया जा रहा है । यह बात ज़मीनों के छिन जाने से ज़्यादा ख़तरनाक थी ।

वीरेन्द्र ने उसका नोटिस लिया । आम सभा की समाप्ति के बाद मंत्री जी को अपने घर खाने पर बुलाया । पहले तो मंत्री न-न करते रहे, लेकिन बाद में वे तैयार हो गये ।

खाने के बाद बातों का सिलसिला शुरू हुआ तो वीरेन्द्र ने पूछा–''श्रीमान जी, इस इलाक़े को हमारे बाप-दादा ने बसाया । वे यहां के बेताज बादशाह थे । यहां की जनता ने कभी उनके सामने ज़ुबान नहीं खोली । लेकिन आप तो यहां की परंपरा और संस्कृति को जड़ से उखाड़ रहे हैं ।''

मंत्री ने पूछा, ''यह आपसे किसने कहा ?''

''आप ही तो कह रहे थे...'' वीरेन्द्र बोला, ''जनता की इच्छा के अनुसार...इत्यादि ।''

मंत्री महोदय हंसने लगे, ''श्रीमान वीरेन्द्र, आप बहुत भोले हैं । अरे भई, क्या यह नहीं हो सकता है कि हम जनता से उनकी इच्छा पूछें तो वह आप ही के पक्ष में अपना मत प्रकट करें ?''

''वह कैसे होगा ?'' वीरेन्द्र ने पूछा–

''दरअस्ल इस वक़्त हमारी पार्टी की सरकार है । हम आपको अपना उम्मीदवार बनाएंगे और चुनाव जीतने के सारे गुर सिखाएंगे । अन्तर केवल इतना होगा कि अभी आप अपनी इच्छा से उनके स्वामी बने हुए हो, चुनावों के बाद उनकी मर्ज़ी से सत्ता संभालेंगे और अपनी जनता के प्रतिनिधि कहलाएंगे...मेरा मतलब उनके विधायक बन जाएंगे ।''

''वह तो ठीक है...'' वीरेन्द्र ने पूछा, ''परंतु अगर इन ग़रीबों में से कोई चुनाव में खड़ा हो गया तो क्या होगा ?''

मंत्री महोदय ने बड़े आराम से कहा, वह हार जाएगा। हम उनमें फूट डलवा देंगे, उनको लालच देंगे, ख़रीदेंगे, उनको आपस में लड़वाएंगे, उनके ख़िलाफ़ संचार माध्यम का उपयोग करेंगे। इन सब कामों के लिए रुपया चाहिए, वह तो तुम्हारे पा है ही। इसलिए चुनाव में कामयाबी तुम्हारी ही होगी।''

''लेकिन वह जो आप कह रहे थे कि जनता की सलाह से उनकी प्रगति वाली बात...वह भी तो घातक हो सकती है ?''

''अरे भाई वीरेन्द्र...यह सब कहने की बातें होती हैं। इन्हें गंभीरता से नहीं लिया जाता। जनता को बहलाने के लिए यह सब कहते रहना पड़ता है। जनता तो इसी से फूली नहीं समाएगी और उनका प्रतिनिधि उनकी मर्ज़ी से चुना जाता है। अब उनको इससे क्या ग़रज़ कि वह शासन भी उनकी इच्छा से करता है या नहीं।''

एक साल बाद उस क्षेत्र में चुनाव की घोषणा हो गयी। मंत्री महोदय ने अपना वचन निभाते हुए वीरेन्द्र को अपनी पार्टी का टिकट दे दिया। लेकिन विरोधी पक्ष कहां पीछे रहने वाला था। उसके आदमियों ने पता लगाया कि वीरेन्द्र को कौन हरा सकता है। एक मात्र नाम शमशेर का सामने आया।

यह चूंकि स्थानीय इकाई के चुनाव थे, इसलिए वे दोनों दो राष्ट्रीय पक्षों की छत्रछाया में आज़ाद उम्मीदवार की हैसियत से चुनाव लड़ रहे थे। एक के चुनाव का निशान रगबी की गेंद थी तो दूसरे का चुनाव चिन्ह मेंढ़ा था। बचपन का खेल और जवानी की लड़ाई फिर से शुरू हो गयी थी। लोग ज़िन्दाबाद मुर्दाबाद के नारे लगा रहे थे। किसी और को जिताने या हराने की ख़ातिर एक-दूसरे के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। लड़ना किसी को था और जीतना किसी और को...मरना किसी को था और हारना किसी और को...वही पुराना खेल एक नये स्वरूप में खेला जा रहा था... कालचक्र बड़ी तेज़ गति से घूम रहा था।

''हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : सबसे बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सलूक करे।''

(मुस्लिम)

मुहम्मद रफ़ीक़ बट

मुंबई

हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं

❖ राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु'
(सिवान, बिहार)

पुस्तक	:	'हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं'
सम्पादक	:	डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर'
प्रकाशक	:	भास्कर साहित्य भारती, प्रखंड कार्यालय के सामने, लखरांव, सिवान (बिहार) 841226
प्रकाशन	:	2014 ई॰
पृष्ठ	:	72, मूल्य : 125 रुपया मात्र

डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी विरल साहित्यकार हैं । उन्होंने कविता, कहानी, यात्रा-संस्मरण, लोक साहित्य, संस्मरण, निबंध, गीत, व्याख्यान, समीक्षा, एकांकी, सम्पादन, अनुवाद, पत्रकारिता, आत्मकथा आदि दर्जनों विधाओं में तीन दर्जन पुस्तकों के साथ ही लघुकथा के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय कार्य किया है । लघुकथा के क्षेत्र में मौलिक कृतियां, सम्पादित कृतियां, अनेक पत्रिकाओं के दर्जनों लघुकथा विशेषांकों का सम्पादन, अपनी पत्रिकाओं में लघुकथाओं को प्राथमिकता देना तथा पत्र-पत्रिकाओं में लघुकथा लेखन–पांचों तरह से उन्होंने लघुकथा को समृद्ध किया है । उनके मौलिक लघुकथा संकलन 'हाथी के दो दांत' ने लघुकथा के क्षेत्र में जो ख्याति अर्जित की है, वही प्रतिष्ठा उनके सम्पादित लघुकथा संकलन 'वृक्ष कोटर से' को प्राप्त है । 'साहित्यकार का दर्द' उनका द्वितीय मौलिक लघुकथा संकलन है जो प्रेस में है ।

'हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' का चतुर्थ लघुकथा संकलन है । इसमें भारत के 15 प्रदेशों यथा बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, असम, राजस्थान, प॰ बंगाल और हिमाचल प्रदेश के 65 लघुकथाकारों की एक-एक लघुकथा संकलित हैं । प्रकाशकीय में डॉ॰ अली असग़र ने स्पष्ट लिखा है–

"हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथा में, भारत के 15 प्रदेशों के 65 लघुकथाकारों की एक-एक लघुकथा संकलित है । सभी की सभी लघुकथाएं पठनीय, मननीय, भावप्रद, शिक्षाप्रद एवं समाजोपयोगी हैं ।"

जैसा कि हम जानते हैं, डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' एक सिद्धहस्त सम्पादक हैं । हिन्दी-भोजपुरी की दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करके उन्होंने विपुल यश तो अर्जित किया ही है, अनेक मनोरम संकलनों का सम्पादन करके भी अपनी सम्पादन कला का लोहा मनवा दिया है । हिन्दी-भोजपुरी दोनों साहित्य उनकी सम्पादन कला के क़ायल हैं । अनेक विद्वानों ने उनकी सम्पादकीय दक्षता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है ।

प्रस्तुत संकलन में उनकी सम्पादन कला की विलक्षणता पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर दिखलायी पड़ती है । भारत सदृश विशाल देश के 15 प्रदेशों के लघुकथाकारों से 65 लघुकथाएं लेकर एक सुमनोहर हार तैयार करना कोई हंसी खेल नहीं है । और उसमें भी 'हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं' सचमुच श्रेष्ठ लघुकथा संकलन है और इसकी सभी लघुकथाएं मनोहारी, पठनीय, मननीय एवं समाजोपयोगी हैं ।

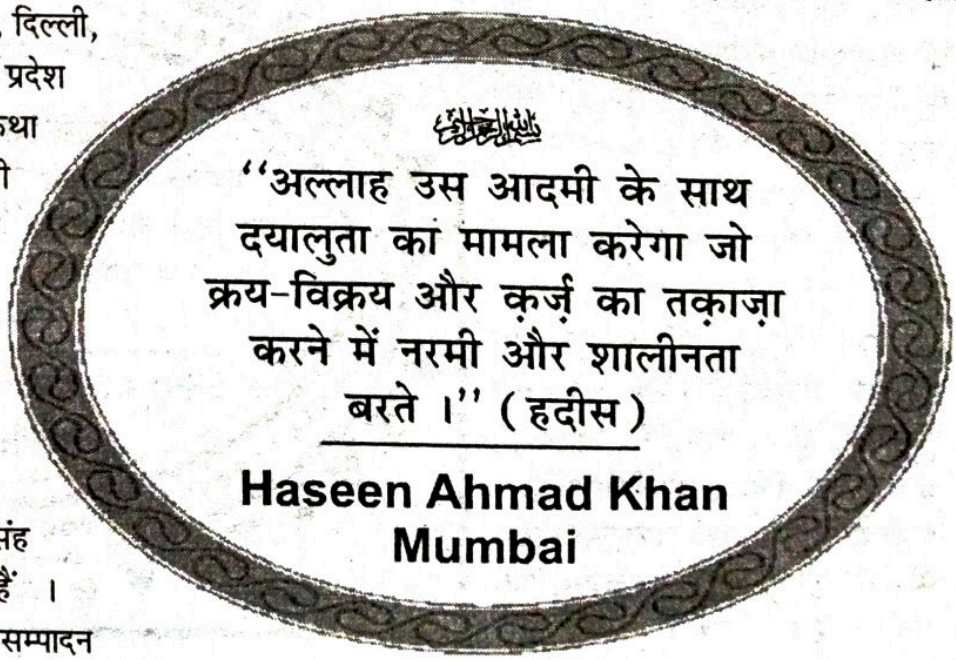

समाज को सुसंस्कृत, समुन्नत एवं विवेकशील बनाने में इस संकलन का काफ़ी महत्वपूर्ण योगदान रहेगा ।

विवेचना के लिए हम डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' की लघुकथा 'कलक्टर की बेटी' को लेते हैं । आज नारी-स्वतंत्रता के नाम पर हमारे समाज को विकृत करने की साज़िश चल रही है । हमारे ऊपर पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है । डॉ॰ भास्कर ने अपनी लघुकथा 'कलक्टर की बेटी' में इसका खुलकर विरोध किया है । रामदेव जी ने अपनी पुत्र से कहा–"मैं तुम्हारी एक भी बात सुनना नहीं चाहता । तुम मेरी बेटी हो और यहां आ गयी हो, तो रात भर रह लो, पर सुबह तुम्हें अपनी ससुराल लौट जाना होगा । भविष्य में अगर मैं तुम्हें बुलाऊं तभी यहां आना । और हां, ससुराल में अपने पति के साथ एक अनुशासित पत्नी की तरह रहना ।" इसके बाद पति-पत्नी के बीच सारे झगड़े समाप्त हो गये । इसी प्रकार संकलन की सभी लघुकथाएं शिक्षाप्रद और समाज को जोड़ने वाली हैं, तोड़ने वाली नहीं ।

'हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं' संकलन में डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' ने जिन लघुकथाकारों की लघुकथाएं संकलित की हैं उनमें डॉ॰ रामनिवास 'मानव', डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर', डॉ॰ कमल चोपड़ा, सुकेश साहनी, डॉ॰ सतीशराज पुष्करणा, विक्रम सोनी, डॉ॰ सतीश दुबे, चित्रा मुदगल, कुमार शर्मा 'अनिल', श्रीमती शैलचन्द्रा, डॉ॰ हरेराम पाठक, नरेन्द्र कौर छाबड़ा, ऊषा अग्रवाल 'पारस', उज्ज्वला केलकर, डॉ॰ सुनील कुमार, कुमुदशाह, रामेश्वर कम्बोज हिमांशु, डॉ॰ राजकुमार निजात, घमंडी लाल अग्रवाल, डॉ॰ रामदुलार सिंह 'पटाया', नन्दल हितैषी, डॉ॰ मिथिलेश कुमारी मिश्र, डॉ॰ राजकुमार घोटड़, बलराम, भगीरथ, कालीचरण प्रेमी, पुष्पा जमुआर, उमेश कुमार पाठक 'रवि', कैलाश झा 'किंकर', शिवदत्त मिश्र, नरेन्द्र कुमार सिंह, राधेश्याम 'भारतीय' आदि प्रमुख हैं ।

इस संकलन का शीर्षक भी बिल्कुल उपयुक्त है । डॉ॰ सतीशराज पुष्करणा, डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर', डॉ॰ कमल चोपड़ा, कालीचरण प्रेमी, रामनिवास 'मानव', डॉ॰ राजकुमार घोटड़, डॉ॰ राजकुमार निजात, बलराम, डॉ॰ सतीश दुबे, विक्रम सोनी जैसे लघुकथाकार जिस संकलन में हों, तो वह निश्चय ही श्रेष्ठ लघुकथा संकलन होगा । लघुकथा को समर्पित इन समर्थ लघुकथाकारों की लघुकथाओं ने संकलन की स्तरीयता में चार चांद लगा दिये हैं । डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' ने अपने इस अनमोल संकलन को अपने द्वितीय पुत्र, उसकी पत्नी और पुत्र-पुत्री को समर्पित किया है । भाव, भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से संकलन की लघुकथाएं उच्च कोटि की हैं । संप्रेषणीयता का कहीं कोई संकट नहीं है । लघुकथाओं की भाषा सरल, सहज एवं प्रांजल है । कहीं-कहीं स्थानीय भाषओं का भी प्रयोग हुआ है, किन्तु इससे लघुकथाओं की पाठकीयता में श्रीवृद्धि ही हुई है । शिल्प की दृष्टि से इनमें कसावट, रोचकता और पाठकों के मन को रमाने की भरपूर चेष्टा है । इनमें भाव है, गंध है, सुगंध है और पाठकों को बांधे रखने की अपार क्षमता है । संवादों में प्रवाह एवं नाटकीयता है ।

लघुकथाओं में शीर्षक का भी बड़ा महत्व होता है । 'हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं' संकलन की लघुकथाओं के शीर्षक भी मनोहारी, भावप्रद एवं आकर्षक हैं । उनमें कहीं कोई विरोधाभास नहीं है । लघुकथाओं की कथावस्तुओं में विविधता तो है ही, व्यापकता भी है ।

निश्चय ही सम्पादन कला में सर्वतोभावेन निष्पात डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' के मनोरम सम्पादन में 'हिन्दी की श्रेष्ठ लघुकथाएं, एक श्रेष्ठ लघुकथा संकलन हो गया है । इसके लिए डॉ॰ भास्कर अति प्रशंसा के पात्र हैं ।



जीवन को सार्थक बनाइए

❖ श्याम नारायण चौहान
(चंदौली, उ०प्र०)

आत्मा किसी जीव के जीवन का मूल आधार होती है जब यह किसी शरीर में मौजूद होती है तो उसे जीवात्मा (प्राणी) कहा जाता है। इस स्थिति में आत्मा शरीर की मूल होती है उसके बिना उस प्राणी का कोई अस्तित्व ही नहीं है जैसा कि रामायण में है।

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी।
तैसीअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।।

–रामायण (अयोध्या काण्ड, 64:4)

जिस प्रकार बिना जान के देह का अस्तित्व नहीं और बिना पानी के नदी का अस्तित्व नहीं ठीक उसी प्रकार बिना पुरुष के स्त्री का जीवन व्यर्थ है।

आत्मा को किसी प्रकार से नष्ट नहीं किया जा सकता है। जैसा कि पवित्र ग्रंथ गीता में है।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ।।

–गीता 2:30

अर्जुन यह आत्मा सबके शरीर में अवध्य है अकाट्य है इसलिए संपूर्ण भूत प्राणियों के लिए तू शोक करने योग्य नहीं है।

जिस प्राणी में आत्मा जितनी स्वच्छंद भाव से विकसित होती है उस प्राणी का विकास उतना ही बुलन्द और विस्तृत होता है और जिस प्राणी में आत्मा संकुचित और दबी हुई होती है उस प्राणी का विकास उतना ही कम होता है। आत्मा का सर्वांगीण विकास होने और प्राणी के सत्य पर क़ायम होने पर ही वह महापुरुष या पुरुषोत्तम कहलाता है। मानव तन के संचालन हेतु ईश्वर ने जो व्यवस्था निर्धारित की है वह गीता के माध्यम से जाना जा सकता है।

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ।।

–गीता 3:42

अर्जुन इस शरीर से तू इन्द्रियों को परे अर्थात सूक्ष्म और बलवान जान, इन्द्रियों से परे मन है यह उनसे भी बलवान है। मन से परे बुद्धि है और बुद्धि से भी अत्यंत परे है वह तुम्हारी आत्मा है वही हो तुम फिर कहते हैं–

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ।।

–गीता 3:43

इस प्रकार बुद्धि से परे अर्थात सूक्ष्म और बलवान अपने आत्मा को जानकर, आत्म बल को समझकर बुद्धि के द्वारा अपने मन को बस में करके अर्जुन इस कामरूपी दुर्जय शत्रु को मार काम एक दुर्जय शत्रु है इन्द्रियों के द्वारा यह आत्मा को मोहित करता है।

आत्मा के बारे में किसी विद्वान ने कहा है–

''यू आर ए सोल विथ ए बाडी रेदर दैन ए बाडी विथ एक सोल''

(तुम एक आत्मा हो जो एक शरीर रखता है न कि तुम एक शरीर हो जो एक आत्मा रखता है)

आत्मा ही सत्य है सनातन अदृश्य अविनाशी तथा अपरिवर्तनशील है। गीता अध्याय 2:20 तुम यह शरीर धारण करने से पहले भी मौजूद थे आज भी मौजूद हो और मर जाने के बाद भी मौजूद रहोगे। जैसा कि पवित्र ग्रंथ गीता में है–

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तानिधनान्येव तत्र का परिदेवना ।।

–गीता 2:28

संपूर्ण प्राणी जन्म से पहले बिना शरीर वाले और मरने के बाद भी बिना शरीर वाले हैं जन्म से पहले और मृत्यु के पश्चात भी दिखायी नहीं पड़ते। केवल जन्म मृत्यु के बीच में ही शरीर धारण किये हुए दिखायी देते हैं।

गीता के अनुसार शरीर एक वस्त्र है जैसे पुराने वस्त्र को त्यागकर मनुष्य नया वस्त्र धारण कर लेता है ठीक उसी प्रकार भूतादिकों का स्वामी आत्मा इस शरीर रूपी वस्त्र को त्यागकर दूसरा शरीर (वस्त्र) धारण कर लेता है। जैसा कि गीता में है–

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

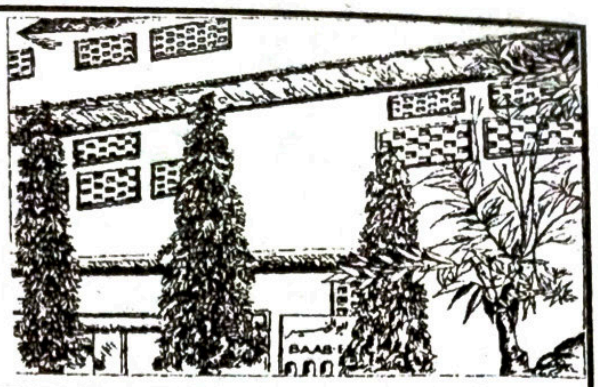

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 28 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2014 ई॰ तक 120 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 30 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 15,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : **इक़बाल अहमद ख़ां**

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।

–गीता 2:22

जैसे मनुष्य ''जीर्णानि वासांसि'' जीर्ण-शीर्ण पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को ग्रहण करता है वैसे ही यह जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को धारण करता है ।

नोट : किन्तु यह याद रहे कि मानव तन बड़े भाग्य और परमात्मा के असीम कृपा से प्राप्त होता है क्योंकि मानव तन सृष्टि की हर प्राणीयों में श्रेष्ठ व बरतर है । इसे चेतना, विवेक और ज्ञान देकर ईश्वर ने पैदा किया है । इसीलिए देवताओं ने मानव तन में आकर प्रभु की आराधना हेतु उनसे आग्रह किया है जैसा कि रामायण में है–

बड़े भाग्य मानुष तन पावार ।
सुर दुर्लभ सद् ग्रंथन गावा ।।

–रामायण (उत्तर काण्ड, 42:4)

शांति आत्मा का ही मूल स्रोत है अशांति आत्मा को विघटित करने की सबसे बड़ी शक्ति है । यदि आत्मा में चिरस्थायी शांति प्राप्त हो जाए तो अशांति आ ही नहीं सकती । सभी ज्ञानों में आत्म ज्ञान श्रेष्ठ है इसकी उपलब्धि चित्तवित्तियों का दमन कर देने में है । वाणी आत्मा के शस्त्रागार में सर्वोत्कृष्ट शस्त्र है इसके सफल उपयोग में जीवन की सफलता है । आत्मा की बातें सुने मन की बातों पर न चले आत्माराम के चिंतन से सभी बिघ्न समूल नष्ट हो जाते हैं । आत्मा की आवाज़ पहचानने वाला अदृश्य को भी दृष्टिगत करता है । आत्मा ही फलवती जीवन को सार्थक करती है उसकी अवज्ञा निराशा और निष्फल होती है । पवित्र आत्मा के लिए विश्व में सब कुछ सुलभ है आत्मा ही कल्पवृक्ष है इस कल्पवृक्ष के नीचे की हुई कामनाएं अवश्य पूर्ण होती है । अत: तू अपनी आत्मा की रक्षा कर आत्म रक्षा ही सबसे बड़ा धर्म है ।

यह जीवन स्थली मानव के लिए परीक्षा स्थल है क्योंकि वह अपने कर्मों का रचयिता है और परमात्मा के यहां जवाबदेह है चूंकि जीवधारी में शरीर और आत्मा दोनों शामिल है । शरीर को स्वस्थ और सुडौल रखने के लिए अच्छे ख़ुराक (भोजन) की ज़रूरत होती है ठीक उसी प्रकार आत्मा को शुद्ध एवं पवित्र रखने के लिए सद्कर्म एवं ईशबन्दगी अपेक्षित है । इसलिए नितांत रूप से उस परमात्मा की उपासना करनी चाहिए ताकि मानव जीवन सार्थक हो जैसा कि गीता में वर्णित है ।

यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानव: ।।

–गीता 18:46

जिस परमात्मा से समस्त प्राणियों की उत्पत्ति हुई है जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है उस परमेश्वर को मनुष्य अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा (अनुपालन) करके परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है ।

अत: हमें मानव तन पाकर इस जीवन अवधि (अमूल्य समय) को नष्ट नहीं करना चाहिए और सतत अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए अपने कर्मों को अंजाम देना चाहिए ताकि मानव जीवन सार्थक हो ।

एक और विशेष छूट

'साप्ताहिक कान्ति', 'कान्ति मासिक', 'सेहरोज़ा दावत' और **मासिक 'ज़िन्दगी-ए-नव'** दावत ट्रस्ट के तहत प्रकाशित होते हैं जिनकी संयुक्त वार्षिक सहयोग राशि 1290/- रुपये होती है । यदि कोई व्यक्ति अपने या अपने सगे-संबंधियों व परिजनों के लिए चारों पत्र/पत्रिकाएं एक साथ एक वर्ष के लिए एक पते पर या एक से अधिक पते पर जारी करवाना चाहें तो केवल 1000/- (एक हज़ार) रुपये एकमुश्त भेजकर जारी करवा सकते हैं।

पत्राचार और अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें–

मैनेजर, दावत ट्रस्ट

डी-314, दावतनगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
Tel.: Dawat: 011-26949539, 09818799113
Kanti: 011-26949430, 09818799223
Zindagi: 09818799113, Fax: 011-26958816

ख़तरा बढ़ रहा है हमारे समुद्री तटों पर

■ विनय राणा

मानव सभ्यता की पिछले चार वर्षों की विकास यात्रा सागरों और झीलों के आसपास की भूमि पर बसने और फलने-फूलने की कहानी है । मनुष्य ने यह भूमि चुनी क्योंकि रेगिस्तानों, पहाड़ों या जंगलों में उसे वह सुरक्षा, आसान भोजन और आवागमन नहीं मिल पाता, जो समुद्रों ने दिया । भूमध्य सागर के पास यूनानी हों, कैस्पियन के पास फ़ारसी या पीले सागर के पास चीनी, सभ्यताएं वहीं विकसित हुई, जहां छोटी नौकाएं सूचनाओं और वस्तुओं का आदान-प्रदान कर सकती थीं । व्यापार आसानी से हो सकता था, मछलियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं और नदियों के साथ बहकर आई मिट्टी से भूमि उपजाऊ थी । यही वजह थी कि समुद्र तट और बंदरगाह हमेशा भूमि के अन्य हिस्सों से ज़्यादा मूल्यवान माने जाते रहे हैं और उन पर नियंत्रण, सभ्यताओं की सुरक्षा भावना के केन्द्र में रहा । उस समय सुरक्षा का अर्थ ही इस भूमि, समुद्री आवागमन और व्यापार पर नियंत्रण से था । पिछली कुछ शताब्दियों में इसका अर्थ पानी पर ही क़ब्ज़ा कर लेना भी माना जा रहा है और उपनदियों का अत्यधिक दोहन, नहरों का निर्माण, बंदरगाहों और समुद्रों से क्रमशः कीचड़ और खनिजों का उत्कर्षण और बांधों का निर्माण बढ़ रहा है ।

अब पिछले कुछ दशकों में मनुष्यों और समुद्रों के इस ऐतिहासिक संबंध पर एक और तनाव हावी होता जा रहा है । समुद्रों और उनसे जुड़ी नदियों के तटों के आसपास जिस तेज़ी से मानव सभ्यता विकसित हुई है, उससे इनका अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ गया है । मानवीय गतिविधियां उन सामुद्रिक विशेषताओं को ही नष्ट कर करने लगी हैं, जिनके कारण समुद्र मनुष्यों के लिए मूल्यवान हैं । समुद्र और भूमि पर खाद्य उत्पादन कम होने लगा है और मौसम में नकारात्मकता परिवर्तन होने लगे हैं । आज विश्व के अधिकांश समुद्र घायल हैं । ज़मीन से उनका पारिस्थितिक संपर्क बांधों की वजह से टूट गया है । उनके तल, तेल खनन के कारण छिद्रित और प्रदूषित है ।

उनका वन्य जीवन तटीय विकास के कारण नष्ट हो चुका है और कृषि और औद्योगिक कचरे से पानी प्रदूषित या निर्वायु हो गया है । इन सबके बावजूद जो मछलियां जीवित रह पायी हैं । वे शिकार के कारण नष्ट हो रही हैं । विश्व के सर्वाधिक जैव उपादक जल यानी समुद्र की पारिस्थितिकी नष्ट हो रही है या कुछ हिस्सों मे नष्ट हो चुकी हैं । नष्ट हो चुके विध्वंस व ज़रूरी संरक्षण का प्रतिशत हर समुद्र के लिए अलग-अलग है लेकिन सामान्यतया खुले महासागरों के बजाए ज़मीन से घिरे समुद्रों को नुक़सान तेज़ी से ज़्यादा होता है क्योंकि पानी का बहाव सीमित है और प्रदूषक जल्दी क्षीण या निष्प्रभावी नहीं होते ।

मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए समुद्र आज भी उतने ही ज़रूरी हैं, जितने हज़ारों वर्ष पूर्व थे और इसलिए उनका संरक्षण भी ज़रूरी है । संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी है कि समुद्रों से जुड़ी सुरक्षा की परिभाषा बदली जाए इन पर अधिकार के लिए आपसी प्रतियोगिता के बजाए इन्हें बजाए इन्हें बचाए रखने के लिए संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है । विश्व के क़रीब 35 प्रमुख सागर हैं । इनमें से सात काला सागर, पीला सागर, कैस्पियन, बरिंग, बाल्टिक, दक्षिण चीन और भूमध्य सागर इन सभी सागरों को पहुंचे नुक़सान की सही तस्वीर देते हैं । काला सागर अपनी प्रचुर मछलियों, अच्छे मौसम और तटीय सुंदरता के लिए विख्यात था और अमीर रूसी इसके तटों पर अपने रिसॉर्ट बनाते थे, लेकिन अब इसे भी वही बीमारी लग चुकी है, जो दुनिया के क़रीब-क़रीब हर सागर को अपने गिरफ़्त में ले चुकी है । जलीय पोषक तत्वों की अत्यधिक मात्रा । खेतों में आने वाले मानव अपशिष्ट के कारण जीवाणुओं और शैवालुओं में विस्फोटक वृद्धि हुई है जो समुद्र की सतह पर इतनी घनी चादर सी तान देते हैं कि सूर्य का प्रकाश भीतर नहीं जा पाता । फलस्वरूप प्राकृतिक पारिस्थितिक संतुलन नष्ट हो रहा है ।

शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने हर तरह का औद्योगिक कचरा यहां डुबोया है और अब काले सागर की

सतह तैरते शैवाल के कारण हरी दिखती है । यह शैवाल पानी में घुली ऑक्सीजन का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल कर पानी को निवार्यु बना रहा है । फलस्वरूप काले सागर में जीवन कम होता जा रहा है । जब यह शैवाल मृत होकर सागर तल में जमने लगता है तो हाइड्रोजन सल्फाइड मुक्त होती है । जो जीवों के लिए विष समान है । काले सागर में प्रतिवर्ष हज़ार टन फास्फोरस और लाख हज़ार टन नाइट्रोजन बहाया जाता है । रूसी समाचार पत्र तास के अनुसार काला सागर मृत्यु की कगार पर खड़ा है । उत्तरी चीन और कोरिया के बीच स्थित पीले सागर की स्थिति और भी दयनीय है क्योंकि इसके तटों पर जनसंख्या घनत्व काले सागर से भी ज़्यादा है । विडंबना यह है कि जितने ज़्यादा लोग भोजन और नौकरियों के लिए समुद्र पर निर्भर हैं, प्रदूषण के कारण वह उतना ही असमर्थ होता जा रहा है ।

चीन की बढ़ती आबादी के साथ-साथ वहां तटीय भूमि पर खेती प्रतिवर्ष पर साढ़े तीन हज़ार वर्ग कीलोमीटर की गति से बढ़ रही है । इसके अतिरिक्त आसपास बसे शहरों में उठने वाले धुएं और सीधे बहा दिए जाने वाले औद्योगिक कचरे से भी पीला सागर प्रदूषित हुआ है । स्वीडन और नार्वे से आकर बाल्टिक सागर में मिलने वाली नदियों में से अधिकांश के आसपास उद्योग-कागज के स्रोत हैं । कागज़ को ज़्यादा से ज़्यादा सफ़ेद बनाने के लिए क्लोरीन और उसके यौगिकों का उपयोग होने लगा था । क्लोरीन की इस प्रक्रिया में अब क्लोरीन यौगिक पर्यावरण से मुक्त होते हैं, जिनका अधिकांश हिस्सा बाल्टिक सागर को मिलता है । पानी में अघुलनशील ये यौगिक जीवों और वनस्पतियों के मांसल ऊतकों में एकत्र हो जाते हैं । जब ये यौगिक खाद्य शृंखला में आगे बढ़कर उच्च प्रजातियों व मनुष्यों तक पहुंचते हैं तो कैंसर से लेकर प्रजनन संबंधी और अंत स्त्रावी बीमारियों तक का कारण बनते हैं । सील मछलियों सहित बाल्टिक सागर मे पाईजाने वाली कई उच्च प्रजातियां लगभग लुप्त हो चुकी हैं ।

इतना ही नहीं, जीवित बचे जीवों की नई पौध में कई जन्मजात विकृतियां हैं । पड़ोसी उत्तरी सागर के मुक़ाबले बाल्टिक सागर से पकड़ी गई मछलियों से ज़हरीले रसायनों की मात्रा बहुत ज़्यादा है । ये सारे दुष्प्रभाव पहले पहचाने नहीं जा सके । अब प्रदूषण इतना अधिक और इसके प्रभाव इतने अधिक मज़बूत हैं कि कुछ भी करने के लिए बहुत देर हो चुकी है । क्लोरीन के इन कार्बनिक यौगिकों के अलावा अन्य स्रोतों से कई ज़हरीली धातुएं भी बाल्टिक सागर में आकर मिलती हैं और पिछले पचास वर्षों में उनकी मात्रा कई गुना बढ़ चुकी है । प्रमुख सागरों में से अधिकांश आंशिक रूप से घिरे हुए हैं और उनके पास अपने प्रदूषण को बहा देने के लिए संकरा ही सही, कोई रास्ता है, लेकिन छोटा-सा कैस्पियन सागर सब ओर से घिरा हुआ है और इसकी जीवनदायी नदियां सबसे अधिक प्रदूषित की जाती हैं । परिणामस्वरूप कैस्पियन सागर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्पाद केवियर नष्ट हो चुका है । अंतत: हमें अपने दिलों को एक बार फिर से इन सागरों से जोड़ने की ज़रूरत है, जिन्होंने इतिहास के उदय से लेकर अब तक बिना शिकायत किए हमारी सभ्यता को विकसित होने में सहारा दिया । उनके प्रति गहरी संवेदना और अपनापन कई समस्याओं का समाधान कर सकता है । हम शायद उन्हें उनका वह मूल स्वरूप न लौटा पाएं । यह शायद अब संभव ही नहीं है, लेकिन उनकी जितनी भी पर्यावरणीय और आर्थिक उपयोगिता बचाई जा सकती है, उसे बचा लेने के लिए तुरंत प्रयास करने की ज़रूरत है ।

आज का हिन्दुस्तान

खोखली जड़ों पर कामना करता विशाल वृक्ष की,
अंधानुकरण कर जीतना चाहता दौड़ ज़िन्दगी की ।
समय-समय पर साम्प्रदायिकता को जन्म दे,
बात करता 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की ।
विचारों की दास्ता को आज भी क़ायम रख,
स्वप्न देखता आसमान में उड़ान भरते पक्षी का ।
तोड़ कर किसी का विश्वास,
कुर्सी पर बैठ बजाता 'शंखनाद' ।
सुकून नहीं, सौम्यता नहीं, सिर्फ़ है...
मुखौटा लगाए, खोखली हंसी हंसता,
आज का हिन्दुस्तान ।

दीप्ति सक्सेना
ब्लॉक-I, 103 महागणेशनगरी (मुंडवा)
पूणे (महाराष्ट्र)

कैसे-कैसे अजीब नाम

अंग्रेज़ी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि नाटककार विलियम शेक्सपीयर ने एक बार कहा था–नाम में क्या रखा है । गुलाब को किसी भी नाम से पुकारो, वह गुलाब ही रहेगा । मगर दुनिया में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने लंबे और भारी-भरकम नामों की वजह से चर्चित हैं ।

दुनिया के मशहूर चित्रकार पिकासो का पूरा नाम था–पावलो डिएगो जोंस फ्रांसिस्को क्रिस्पिन किस्पियानो डे ला सोन्टिसिना ट्रिनिडाड रूज बाई पिकासो जिसमें अंग्रेज़ी के 93 अक्षर हैं । इतना लंबा नाम याद कर, बोल और लिख पाना वाक़ई कठिन है । लोग उच्चारण में सुविधा तथा मुख सुख हेतु इस चित्रकार को उसके संक्षिप्त नाम पिकासो से ही जानते हैं । इसी प्रकार मशहूर फुटबालर पेले का उपनाम सन गाड, सूसो और डिको है । पेले का पूरा नाम Arontes Do Nasciemento Edson है, जिसमें अंग्रेज़ी के 25 अक्षर हैं ।

इसी प्रकार अफ़्रीक़ा के घाना देश स्थित कुमासी के कोफैंडरोज में सन 1938 में जन्मे संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व सेक्रेट्री जनरल कोफी ए अन्नान का नाम सार्थक है । कोफी शब्द का अर्थ ऐसा व्यक्ति है जिसका जन्म शुक्रवार को हुआ हो तथा अन्नान का अर्थ है ऐसा पुत्र जो परिवार में चौथे नम्बर का हो । यह बात कोफी पर पूर्णत: सही लागू होती ।

ब्रिटेन के निवासी डेरेक मैक क्वीन का नाम भी कितना अजीब है । उसका कथन है कि उसके पिता ने सन 1974-75 के बीच रेंजर्स फुटबाल टीम के विजेता सभी खिलाड़ियों के नाम पर उसका नामकरण किया । जन्म प्रमाण पत्र में उसका नाम डेरेक पारलेन स्टीन जैक्सन हंटर मैकलाय बायड राबर्टसन ओ हारा जान स्टोन मिलर डावसन आर्मर मैकडूगल मैकलीन मैक्कीन फिफे मैकडोनाल्ड जार्डिन यंग मारिस डैनी हैमिल्टन वाटसन ग्रेग वालेस मैक्कवीन अंकित है । इसमें अंग्रेज़ी भाषा के 198 अक्षर हैं । डेरेक स्वयं अपना पूरा नाम आज तक कंठस्थ नहीं कर पाये हैं । ड्राइविंग लाइसेंस या बच्चों के रजिस्ट्रेशन में कभी वे अपना पूरा नाम नहीं लिख पाये । उनके अनुसार काग़ज़ात पर उनका नाम पारलेन ही संक्षिप्त रूप में चल रहा है ।

इसके पूर्व इटली के जेनिफर जार्ज ने 20 फुटबाल सितारों का नाम मिलाकर अपना 166 अक्षरों का नाम होने का दावा किया था । इसी प्रकार एक अन्य व्यक्ति थामस के जन्म प्रमाण पत्र में 11 सितारों का नाम शामिल है । थामस के पिता ने उसके लिए यह निकनेम चुना था ।

न्यूज़ीलैंड में एक स्थान का नाम अंग्रेज़ी के 85 अक्षरों से मिलकर बना है, जबकि फ्रांस में एक स्थान का नाम केवल एक अक्षर से निर्मित है ।

अमेरिका के हवाई द्वीप की एक महिला ने सरकारी दस्तावेज़ों में 35 अक्षरों का अपना पूरा नाम लिखवाने के लिए 21 साल तक क़ानूनी लड़ाई लड़ी और उसे सफलता भी मिली । लोकेलानी के नाम से जाने जानी वाली जैनिस ने वर्ष 1992 में हवाई द्वीप के एक निवासी से विवाह किया जिसका पूरा नाम काइहानाइकुको आकाहिहिलीटीका होनाएले था । शादी के बाद पति-पत्नी ने सरकारी दस्तावेज़ों में अपना पूरा नाम लिखवाने के लिए क़ानूनी जंग की शुरुआत की क्योंकि जैनिस के कथनानुसार अधिकतर सरकारी काग़ज़ात में नाम लिखने वाले कॉलम में कम अक्षरों की जगह निर्धारित होती है तथा सरकारी कर्मचारी उसके नाम के कुछ अक्षर मजबूरन काट देते थे जिससे उसे काफ़ी ठेस पहुंचती थी । उसे अपना नाम बीच में काटना अथवा उसके अक्षर उड़ा देना पसन्द नहीं था । लिहाज़ा उसने नाम वाले कॉलम में ज़्यादा अक्षरों के लिए स्थान देने की मांग उठायी तथा 21 साल तक चली क़ानूनी जंग में अन्ततोगत्वा उसे सफलता मिली, मगर जैनिस के पति इस सफलता को नहीं देख पाये । इस दौरान उनका निधन हो चुका था ।

● विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

Late Abdul Jabbar Sb.
Tare Kare (kntk)

Posted on 20-21 July 2014
August 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.07.2014

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING



HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING

The best taste in Veg. & Non-Veg. dishes



Now At Ajni Square Wardha Road

Comfortable interior, hygienic separate preparation for Veg. and Non-Veg.
Special air conditioned hall for family.
Comfortable lodging in air conditioned and well decorated rooms.

Customer Care No :- 08796466666

Main Branch :- Central Avenue, Chandra Shekhar Azad Square, Nagpur - 440002
Branch 1 :- Plot No. 1 Hindustan Colony, Ajni Square, Beside Chevrolet Showroom, Wardha Road, Nagpur
Branch 2 :- Opp Battuk Bhai Jewellers, Dharampeth, W.H.C. Road, Nagpur

Ph: 0712-2763131, 2732401

E-mail :- hotelalzamzam@gmail.com

Log on to :- www.hotelalzamzam.com
or like us on :- hotelalzamzam.facebook.com